# कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN : 2583-4991

● भोपाल मंगलवार 21 से 27 जनवरी 2025 ● वर्ष-25 ● अंक-35 ● पृष्ठ-16 ● मूल्य-13 रु. ● RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र. एम.पी./भोपाल/625/2024-26

# कृषि विज्ञान केन्द्रों का अस्तित्व संकट में !

● डॉ. राजाराम त्रिपाठी

समाचारों में इसी हफ्ते कर्मचारियों को आठवां वेतनमान दिए जाने की खबर पढ़ रहा था। अब इसे संयोग कहें या दुर्योग कि इस समय मेरे परिचित केवीके के एक वरिष्ठ साइंटिस्ट का फोन किसी कार्यक्रम के संदर्भ मेंआया, तो मैंने उन्हें आठवें-वेतनमान की बधाईयां दी, पर जवाब में डॉक साहब ने बड़ी ठंडी सांस लेते बुझे हुए स्वर में कहा डॉक्टर साहब आप हमें वेतन बढ़ने की बधाइयां दे रहे हैं, पर हमें तो लगता है सरकार केवीके को ही बंद करना चाहती है। मेरे जरा सा कुरेदने पर बड़े दुखी मन से हुए विस्तार से उन्होंने जो कुछ बताया वास्तव में उसे भारत की खेती के लिए कतई अच्छा नहीं कहा जा सकता। कभी हरित क्रांति का झंडा लेकर भारत की कृषि को नई ऊंचाइयों पर ले जाने का सपना दिखाने वाले कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) आज खुद अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। हालात अगर ऐसे ही चलता रहा, तो ये संस्थान जल्द ही बंद होने की कगार पर पहुंच जाएंगे।

### पक्षपात की पराकाष्ठा

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) का हालिया फरमान मानो उन कर्मियों पर एक गाज बनकर गिरा है, जो देश के किसानों की समस्याओं का समाधान ढूंढने में दिन-रात जुटे रहते हैं। कभी वे किसानों को फसलों की नई तकनीक समझा रहे होते हैं, तो कभी उनके खेतों में कीट नियंत्रण के उपायों पर शोध कर रहे होते हैं। कभी सरकारी कृषि योजनायें किसानों को समझाते देखे जा सकते हैं। लेकिन उनकी अपनी हालत ऐसी हो गई है कि न वेतन समय पर मिल रहा है, न ही अन्य बुनियादी सुविधाएं। इसी हफ्ते केंद्र सरकार ने केंद्रीय कर्मचारियों के लिए आठवें वेतनमान आयोग के गठन का तोहफा दिया है, जबकि केवीके के वैज्ञानिकों और कर्मचारियों के साथ

**कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों के साथ इसी तरह सौतेला व्यवहार रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हम अपने बच्चों को सिर्फ किताबों में बताएंगे कि कभी इस देश में कृषि विज्ञान केंद्र हुआ करते थे। कृषि विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान की दुर्दशा ऐसे समय में चरम पर है जब पिछले छः वर्षों से देश के केन्द्रीय मंत्री मध्यप्रदेश के वर्तमान केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान केव्हीके एवं कृषि विश्वविद्यालयों की बदहाली से पूरी तरह वाकिफ हैं। इसके बावजूद भी दूरगामी कृषि विकास के सपने कितने कारगर होंगे ये तो आने वाला वक्त ही बतायेगा। हाल ही मध्यप्रदेश स्थित लगभग 50 कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों ने अपनी विभिन्न मांगों को लेकर आंदोलन भी किया है।**

ऐसा व्यवहार किया जा रहा है, मानो वे किसी दुश्मन देश के नागरिक हों। यह विरोधाभास न केवल सरकार की प्राथमिकताओं पर सवाल उठाता है, बल्कि इस बात को भी उजागर करता है कि कृषि क्षेत्र और इससे जुड़े लोगों के प्रति उदासीनता कितनी गहरी हो चुकी है।

अधिकतर केवीके कर्मियों के वेतन महीनों से रुके हुए हैं। वैज्ञानिकों और कर्मचारियों को इस हाल में छोड़ दिया गया है कि वे अपनी बुनियादी जरूरतें पूरी करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। यह स्थिति न केवल अमानवीय है, बल्कि कृषि क्षेत्र के प्रति सरकार की उदासीनता को भी उजागर करती है। कोढ़ में खाज तो यह है कि उनकी सेवानिवृत्ति आयु भी घटाकर 60 वर्ष कर दी गई है, जबकि ये वरिष्ठ वैज्ञानिक कम से कम 10 साल और देश की सेवा करने में सक्षम हैं। यह समझ से परे हैं कि जब 75- 80 साल के व्यक्ति मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री जैसे पदों पर बैठकर प्रदेश और देश की सारी जिम्मेदारियां भली-भांति निभा रहे हैं तो केवीके के वैज्ञानिकों को 60 साल में कौन सा कीड़ा लग जाता है, सरकार डस्टबिन में फेंकना चाहती है।यह पक्षपात किस हद तक असहनीय है, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जहां आईसीएआर के अधीन सीधे कार्यरत कर्मचारियों को तो तमाम सुविधाएं मिल रही हैं, वहीं राज्य सरकारों या कृषि विश्वविद्यालयों के अधीन केवीके के कर्मी बुनियादी सुविधाओं के लिए तरस रहे हैं।

### संघर्ष के केन्द्र बनते केवीके

केवीके कर्मियों को न तो रहने के लिए ढंग की व्यवस्था दी जाती है, न ही कार्यालयों में पर्याप्त संसाधन। प्रयोगशालाओं की स्थिति तो ऐसी है कि वहां उपकरण कम, कबाड़ ज्यादा नजर आता है। इन परिस्थितियों में वैज्ञानिक क्या शोध करेंगे और किसे प्रेरित करेंगे?

वैज्ञानिक दिनभर किसानों को उन्नत खेती सिखाने के नाम पर भटकते हैं और रात में खुद इस चिंता में सो नहीं पाते कि अगले महीने परिवार का खर्च कैसे चलेगा। कोई सरकारी अधिकारी पूछे तो हर वैज्ञानिक की पीड़ा यही होती है- हम किसानों को प्रेरित करें, लेकिन हमें कौन प्रेरित करेगा?

### कटौती का कचोटता खेल

आईसीएआर ने अपने बजट को लेकर ऐसा खेल खेला है, मानो ये केवीके वैज्ञानिक और कर्मी किसी अलग ग्रह के प्राणी हों। पहले वेतन के साथ मिलने वाले भत्तों में कटौती की गई। फिर मेडिकल भत्ता, ग्रेच्युटी, और नेशनल पेंशन योजना (एनपीएस) जैसे लाभ बंद कर दिए। अब तो स्थिति यह है कि कई महीनों तक वेतन भी नहीं मिलता। आखिर ऐसे में कोई वैज्ञानिक कैसे शोध करेगा और कैसे अपने परिवार को पाल पाएगा?

### वैश्विक मंच पर भारत की चुनौती

भारत, जो 1.5 अरब की आबादी को खिला रहा है, वह पूरी दुनिया को कृषि निर्यात के जरिए मुद्रा भी दिला रहा है। लेकिन इस देश में कृषि को मजबूत बनाने वाली सबसे बड़ी संस्था, केवीके, खुद इतनी कमजोर हो चुकी है कि उसका अस्तित्व संकट में है। यह विडंबना है कि जब पूरी दुनिया में भारतीय कृषि मॉडल की सराहना हो रही है, तब हमारे अपने वैज्ञानिक मानसिक तनाव में डूबे हुए हैं।

अगर यही स्थिति बनी रही, तो वह दिन दूर नहीं जब भारत की खेती वैश्विक मंच पर हास्य का पात्र बन जाएगी।

( शेष पृष्ठ 14 पर )

# मुख्यमंत्री ने गौ-माता मंदिर सेवा स्थल का किया भूमि-पूजन

**भोपाल।** मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उज्जैन के रत्नाखेड़ी स्थित कपिला गौशाला पहुंचकर वेद ऋचाओं के उच्चारण के मध्य गौ-पूजन कर गौ-माता मंदिर सेवा स्थल का भूमि-पूजन किया। डॉ. यादव द्वारा दी गई 3.5 करोड़ रूपये की निधि से नगर निगम द्वारा विकसित किए जा रहे गौ-माता शेड, सार्वजनिक शौचालय एवं अन्य प्रगतिरत विकास कार्यों का अवलोकन भी किया। इस दौरान केंद्रीय जलशक्ति मंत्री सी.आर. पाटिल भी साथ थे।

मुख्यमंत्री ने वर्ष 2024 को गौ-संवर्धन वर्ष घोषित किया था। डॉ. यादव का लक्ष्य सभी गौ-वंशों का संरक्षण एवं संवर्धन कर लावारिस गौ-वंश से होने वाली दुर्घटनाओं को रोकना, देशी नस्ल की गायों का उन्नयन, जैविक खाद से ऑर्गेनिक कृषि को बढ़ावा देना है।

राज्य सरकार द्वारा गौ-संरक्षण एवं संवर्धन के लिए गौ-वंश आहार अनुदान को दोगुना किया गया है। अब पंजीकृत गौ-शाला के पशुओं को प्रतिदिन 40 रूपये आहार अनुदान दिया जा रहा है। इस दौरान जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट, कौशल विकास एवं रोजगार मंत्री एवं जिले के प्रभारी मंत्री गौतम टेटवाल, अच्युतानंद महाराज, महापौर मुकेश टटवाल, सभापति कलावती यादव आदि जन-प्रतिनिधि उपस्थित रहें।

## जीआई टैग के जरिए वैश्विक पहचान दिलाने संबंधी कार्यशाला

**भोपाल।** स्थानीय उत्पादों को जीआई टैगिंग के जरिए वैश्विक पहचान दिलाने के लिए विंध्याचल भवन स्थित एमएसएमई कार्यालय में कार्यशाला संपन्न हुई। कार्यशाला में प्रमुख रूप से पद्मश्री डॉ. रजनीकांत भी शामिल हुए।इस अवसर पर उद्योग आयुक्त दिलीप कुमार ने कार्यशाला में शामिल सभी विभागों के अधिकारियों से कहा कि वे जीआई टैगिंग के लिए संभावित और चिन्हित उत्पादों की सूची साझा करें। पद्मश्री डॉ. रजनीकांत ने जीआई टैगिंग के फायदे, कानूनी प्रकरण, ब्रांडिंग, बाजार विस्तार और जीआई टैगिंग पर अपने अनुभव साझा किए। कार्यशाला में कृषि, मत्स्य पालन, पशुपालन, रेशम उत्पादन जैसी गतिविधियों से जुड़े विभागों के अधिकारियों ने सहभागिता की। इस दौरान जीआई टैगिंग के लिए उत्पादों का चयन और परियोजना कार्यान्वयन के लिए रोड मैप तैयार किया गया।

# राष्ट्रीय पशुधन मिशन मप्र को बैस्ट परफोर्मिंग अवार्ड

### पशुपालन मंत्री श्री पटेल ने दी बधाई

**भोपाल।** केन्द्र सरकार द्वारा मध्यप्रदेश के पशुपालन एवं डेयरी विभाग को उत्कृष्ट कार्य के लिए बैस्ट परफॉर्मिंग स्टेट का पुरस्कार प्रदान किया गया है। पशुपालन एवं डेयरी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) लखन पटेल ने इस उपलब्धि के लिए सभी संबंधितों को बधाई दी और आशा व्यक्ति की है कि भविष्य में भी योजनाओं के क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश अव्वल रहेगा।

केन्द्रीय पशुपालन एवं डेयरी मंत्री राजीव रंजन सिंह ने पुणे (महाराष्ट्र) में आयोजित एक दिवसीय उद्यमिता विकास कॉन्क्लेव में यह पुरस्कार मध्यप्रदेश के दल को प्रदान किया। प्रदेश से योजना के नोडल अधिकारी डॉ. भगवान मधनानी, डॉ. शिवदत्त श्रीवास्तव और डॉ. प्रखर भार्गव, उप संचालक ने पुरस्कार प्राप्त किया। केन्द्रीय सचिव, पशुपालन एवं डेयरी अल्का उपाध्याय, पशुपालन आयुक्त डॉ. अभीजीत मिश्रा तथा डॉ. पी.एस. पटेल संचालक पशुपालन एवं डेयरी द्वारा भी इस उपलब्धि के लिए प्रदेश के अधिकारियों को बधाई दी गई है।

राष्ट्रीय पशुधन मिशन उद्यमिता विकास कार्यक्रम अंतर्गत मध्यप्रदेश में अभी तक 4800 से अधिक आवेदन ऑनलाइन प्राप्त हो चुके हैं, जिनमें से 530 प्रकरणों में राशि 387.23 करोड़ रुपये बैंकों से स्वीकृत होकर केन्द्र सरकार द्वारा 450 प्रकरणों में 155.36 करोड़ रुपये स्वीकृत किये जा चुके हैं। स्वीकृत प्रकरणों में लगभग 250 उद्यमियों को प्रथम किश्त और 32 को द्वितीय किश्त की अनुदान राशि स्वीकृत होकर प्राप्त हो चुकी है जो राष्ट्रीय स्तर पर सर्वाधिक है।

उत्कृष्ट कार्य करने वाले मध्यप्रदेश के जीत सिंह सिसोदिया (भोपाल), नवनीत जैन (हरदा) को चारा उत्पादन हेतु, शोभा दांगी (राजगढ़) तथा निमिश चावड़ा (शाजापुर) को बकरी पालन तथा यशपाल खन्न (कटनी) को मुर्गी पालन अंतर्गत उत्कृष्ट उद्यमी के रूप में सम्मानित किया गया।

इसी तरह पशुपालन अधोसंरचना विकास निधि अंतर्गत धार जिले की बदनावर तहसील में स्थापित एबिस एक्सपोर्ट इंडिया प्रा.लि. को पशु आहार केटेगरी में सराहनीय कार्य करने हेतु सम्मानित किया गया। इंदौर जिले की सांवेर तहसील में स्थापित बेकरविले स्पेशलिटिस प्रा.लि. को दुग्ध प्रसंस्करण व मूल्य संवर्धन केटेगरी में उत्कृष्ट कार्य के लिये सम्मानित किया गया। इन दोनों इकाईयों की ऑनलाइन लॉन्चिंग भी केंद्रीय पशुपालन मंत्री राजीव रंजन सिंह द्वारा कार्यकम स्थल से की गई।

# एमएसपी पर गेहूं उपार्जन का पंजीयन शुरू

## प्रदेश में 4 हजार केंद्रों पर होगा गेहूं उपार्जन

**भोपाल।** गेहूं खरीदी के लिये किसानों का ऑनलाइन पंजीयन 20 जनवरी से शुरू हो गया है। गेहूं खरीदी के लिये 4 हजार उपार्जन केन्द्र बनाये जायेंगे। गत वर्ष 3800 उपार्जन केन्द्र बनाये गये थे। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने यह जानकारी केन्द्रीय खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री प्रहलाद जोशी के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में दी। श्री जोशी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से गेहूँ उपार्जन की तैयारियों की राज्यवार समीक्षा कर रहे थे।

श्री जोशी ने कहा कि न्यूनतम समर्थन मूल्य के बारे में ज्यादा से ज्यादा जागरूकता लायें। किसानों को गेहूं उपार्जन के बाद जल्द से जल्द भुगतान सुनिश्चित करें। रजिस्ट्रेशन जल्द शुरू करें। उन्होंने कहा कि क्वालिटी कंट्रोल में जिम्मेदार लोगों की ड्यूटी लगायें। श्री राजपूत ने कहा कि प्रदेश में इस वर्ष उपार्जन केन्द्रों पर गेहूं की मेकेनाइज्ड क्लीनिंग के लिये मशीन लगाने का प्रस्ताव है। इससे खराब गेहूं की खरीदी रुकेगी।

उन्होंने समितियों को दिये जाने वाले कमीशन की राशि बढ़ाने की बात कही। उन्होंने गेहूं और चावल के द्वितीय त्रैमास के प्रावधानित अनुदान देयक एवं फोर्टिफाइड राइस आदि मदों की लंबित राशि शीघ्र उपलब्ध कराने का अनुरोध किया। प्रमुख सचिव खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण रश्मि अरुण शमी ने बताया कि उपार्जन के संबंध में उत्तर प्रदेश में की जा रही कार्रवाई के अध्ययन के लिये एक टीम लखनऊ भेजी जा रही है। इस दौरान आयुक्त खाद्य सिबि चक्रवर्ती सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

# 40 लाख मीट्रिक टन से अधिक धान खरीदी

## समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी 23 जनवरी तक

**भोपाल।** खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य पर अभी तक 6 लाख 22 हजार किसानों से 40 लाख 37 हजार 274 मीट्रिक टन धान की खरीदी उपार्जन केन्द्रों में हो चुकी है। धान का उपार्जन 23 जनवरी 2025 तक किया जायेगा। धान कॉमन का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2300 रूपये और धान ग्रेड-ए का 2320 रूपये है। किसानों के आधार लिंक्ड बैंक खातों में अभी तक 6489 करोड़ 39 लाख रूपये की राशि अंतरित कर दी गई है। खरीदी गई धान में से 32 लाख 84 हजार 233 मीट्रिक टन उपार्जित धान का परिवहन किया जा चुका है। कुल 9 लाख 27 हजार मीट्रिक टन धान मिलर्स को भेजी जा चुकी है।

प्रदेश के बालाघाट में 5 लाख 19 हजार 133, सतना 3 लाख 83 हजार 660, कटनी 3 लाख 93 हजार 602, रीवा 3 लाख 36 हजार 573, जबलपुर 3 लाख 48 हजार 522, सिवनी 2 लाख 72 हजार 773, मण्डला 1 लाख 88 हजार 464, शहडोल 1 लाख 82 हजार 963, मैहर 1 लाख 58 हजार 350, नर्मदापुरम 1 लाख 53 हजार 844, सिंगरौली 1 लाख 34 हजार 24, पन्ना 1 लाख 42 हजार 881, उमरिया 1 लाख 21 हजार 145, सीधी 1 लाख 16 हजार 530, अनूपपुर 90 हजार 763, मऊगंज 91 हजार 418, दमोह 78 हजार 273, नरसिंहपुर 72 हजार 134, डिंडोरी 65 हजार 519, रायसेन 44 हजार 935, बैतूल 42 हजार 108, सीहोर 34 हजार 757, सागर 16 हजार 554, छिन्दवाड़ा 11 हजार 371, भिंड 1664, विदिशा 1168, हरदा 1212, शिवपुरी 731, मुरैना 129, अलीराजपुर 56 और झाबुआ जिले में 18 मीट्रिक टन धान की खरीदी की जा चुकी है।

# रबी फसल की बुवाई 632 लाख हेक्टेयर से अधिक

**नई दिल्ली।** कृषि एवं किसान कल्याण विभाग से जारी आंकड़े के अनुसार पिछले साल इसी अवधि के 315.63 लाख हेक्टेयर की तुलना में इस वर्ष लगभग 320 लाख हेक्टेयर में गेहूं की खेती की गई। 139.81 लाख हेक्टेयर में दलहन की खेती की गई। मोटे अनाज के अंतर्गत 53.55 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में खेती की गई। इस साल रबी फसल की बुवाई 632 लाख हेक्टेयर से अधिक हो चुकी है। पिछले साल की इसी अवधि के दौरान 315.63 लाख हेक्टेयर की तुलना में इस साल लगभग 320 लाख हेक्टेयर में गेहूं की खेती की गई है। इसके अलावा 139.81 लाख हेक्टेयर में दलहन की खेती की गई। कृषि मंत्रालय ने बताया कि श्री अन्न और मोटे अनाज के अंतर्गत 53.55 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में खेती की गई।

## गेहूं और दालों के रकबे में उछाल

| फसलें | सामान्य क्षेत्र | बुवाई 24-25 | बुवाई 23-24 |
|---|---|---|---|
| गेहूँ | 312.35 | 320.00 | 315.63 |
| चावल | 42.02 | 22.09 | 21.53 |
| दालें | 140.44 | 139.81 | 139.11 |
| चना | 100.99 | 96.65 | 95.87 |
| मसूर | 15.13 | 17.43 | 17.76 |
| मटर | 6.50 | 8.94 | 8.98 |
| कुल्थी | 1.98 | 3.13 | 3.13 |
| उड़द | 6.15 | 4.95 | 5.02 |
| मूंग | 1.44 | 1.14 | 0.99 |
| लैथिरस/ लतरी | 2.79 | 3.12 | 3.32 |
| अन्य दालें | 5.46 | 4.45 | 4.04 |
| श्री अन्न | 53.46 | 53.55 | 53.37 |
| ज्वार | 24.37 | 23.58 | 25.46 |
| बाजरा | 0.37 | 0.13 | 0.17 |
| रागी | 0.74 | 0.69 | 0.68 |
| छोटा बाजरा | 0.15 | 0.16 | 0.00 |
| मक्का | 22.11 | 22.37 | 20.36 |
| जौ | 5.72 | 6.62 | 6.71 |
| तिलहन | 87.02 | 96.82 | 101.80 |
| सरसों | 79.16 | 88.50 | 93.73 |
| मूंगफली | 3.82 | 3.65 | 3.42 |
| कुसुम | 0.72 | 0.70 | 0.71 |
| सूरजमुखी | 0.81 | 0.74 | 0.43 |
| तिल | 0.58 | 0.20 | 0.37 |
| अलसी | 1.93 | 2.68 | 2.84 |
| अन्य तिलहन | 0.00 | 0.35 | 0.29 |
| कुल | 635.30 | 632.27 | 631.44 |

(क्षेत्रफल- लाख हेक्टेयर में)

# अगले पांच साल में हल्दी उत्पादन 20 लाख टन किया जाएगा : श्री गोयल

## हल्दी उत्पादन में देश की हिस्सेदारी 70 प्रतिशत

**नई दिल्ली।** वाणिज्य व उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि निर्यात को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय हल्दी बोर्ड अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नए बाजार विकसित करने तथा अगले पांच साल में उत्पादन दोगुना कर करीब 20 लाख टन करने में मदद करेगा।

बोर्ड का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा कि यह नए उत्पादों और मूल्यवर्धित हल्दी उत्पादों के लिए देश के पारंपरिक ज्ञान पर अनुसंधान व विकास को बढ़ावा देगा। उद्योग मंत्री ने यहां पत्रकारों से कहा, 'हल्दी को सुनहरा मसाला भी कहा जाता है। वैश्विक हल्दी उत्पादन में भारत की हिस्सेदारी 70 प्रतिशत है। हम पांच साल में उत्पादन दोगुना कर 20 लाख टन करने की योजना बना रहे हैं।' सरकार ने अक्टूबर में राष्ट्रीय हल्दी बोर्ड के गठन की अधिसूचना जारी की। यह देश में हल्दी तथा हल्दी उत्पादों के विकास व वृद्धि पर ध्यान केंद्रित करेगा। पल्ले गंगा रेड्डी को बोर्ड का पहला चेयरपर्सन नामित किया गया है। इसका मुख्यालय निजामाबाद (तेलंगाना) में स्थापित किया गया है। भारत दुनिया में हल्दी का सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता और निर्यातक है। वित्त वर्ष 2022-23 में भारत में 3.24 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में हल्दी की खेती की गई, जिससे 11.61 लाख टन उत्पादन हुआ। भारत में हल्दी की 30 से अधिक किस्में देश के 20 से अधिक राज्यों में उगाई जाती है।

# तीन राज्यों में सोयाबीन खरीदी की समय सीमा बढ़ाई

**नई दिल्ली।** केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, किसानों के कल्याण के लिए निरंतर काम कर रहा है। सोयाबीन की खरीदी न्यूनतम समर्थन मूल्य पर जारी है और अब तक रिकॉर्ड 13 लाख 68 हजार 660 मीट्रिक टन से ज्यादा सोयाबीन खरीदी हो चुकी है।

सोयाबीन खरीदी की समय सीमा बढ़ाने के लिए महाराष्ट्र, राजस्थान और तेलंगाना राज्य ने मांग की थी। इसलिए इन राज्यों में हम सोयाबीन खरीदी की समय सीमा बढ़ा रहे हैं। महाराष्ट्र में सोयाबीन खरीदी 31 जनवरी 2025 तथा राजस्थान में 4 फरवरी 2025 तक सोयाबीन की खरीदी जारी रहेगी। तेलंगाना राज्य ने अतिरिक्त खरीदी की मांग की थी, तो उसे भी बढ़ाया गया है।

# भारत-जर्मनी के बीच कृषि क्षेत्र में साझेदारी मजबूत करने की पहल

**नई दिल्ली।** जर्मनी के राजदूत डॉ. फिलिप एकरमैन ने कृषि भवन में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के सचिव डॉ. देवेश चतुर्वेदी से मुलाकात की। इस बैठक में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के अवसर तलाशने का अवसर मिला, जिसमें कटाई के बाद की तकनीक, जैविक एवं प्राकृतिक खेती तथा कृषि मशीनीकरण शामिल है।

डॉ. चतुर्वेदी ने कृषि क्षेत्र में भारत और जर्मनी के बीच दीर्घकालिक साझेदारी पर जोर दिया, तथा द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के लिए अंतर-सरकारी परामर्श, समझौता ज्ञापन और संयुक्त आशय घोषणा की भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने डिजिटल कृषि और त्रिकोणीय विकास संबंध में वर्तमान सहयोग पर भी प्रकाश डाला जिसकी हाल ही में आईजीसी बैठक के दौरान चर्चा हुई। डॉ. चतुर्वेदी ने आगामी संयुक्त कार्य समूह की बैठक का भी उल्लेख किया, जो इस लाभदायक साझेदारी को और आगे बढ़ाएगी। बैठक में अनेक प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित किया गया, जिसमें मृदा स्वास्थ्य और समग्र उत्पादकता में सुधार के लिए प्राकृतिक और जैविक खेती को बढ़ावा देना शामिल है। अन्य महत्वपूर्ण विषयों में किसान उत्पादक संगठनों को मजबूत करना, टिकाऊ कृषि पद्धतियों को अपनाना, डिजिटल कृषि में प्रगति, बीज क्षेत्र का विकास और क्षमता निर्माण शामिल थे। दोनों पक्षों ने खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में अधिक निवेश और व्यापार को बढ़ावा देने, विशेष रूप से दोनों देशों के बीच बागवानी उत्पादों के निर्यात को बढ़ाने की आवश्यकता पर चर्चा की।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 13/- वार्षिक शुल्क- 700/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube

## साप्ताहिक सुविचार

मनुष्य परिस्थितियों का निर्माता, नियंत्रणकर्ता और स्वामी है।
– श्रीराम शर्मा आचार्य

# शिक्षा की गुणवत्ता

कृषक दूत सम्पादकीय

देश भर में शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर इन दिनों बहस चल रही है। उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षा कैसी होनी चाहिए, इस विषय पर समय-समय पर विषय विशेषज्ञ अपनी राय देते रहते हैं। हाल ही में यूजीसी ने केन्द्र सरकार को संशोधित शिक्षा नीति के तहत कुछ सुझाव दिये हैं जिसे शीघ्र ही अमली जामा पहनाने की तैयारी हो रही है। केन्द्रीय शिक्षण संस्थानों एवं राज्य सरकारों की शिक्षण संस्थाओ के लिये शिक्षा देने वाले प्राध्यापकों की न्यूनतम योग्यता संबंधी नीति तैयार हो गयी है। इसके अन्तर्गत स्नातकोत्तर तक का व्यक्ति सहायक प्राध्यापक नियुक्त होने की पात्रता रखेगा। स्नातकोत्तर तक शिक्षित व्यक्ति यदि राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) उत्तीर्ण नहीं है तब भी सहायक प्राध्यापक बन सकता है। सहायक प्राध्यापक के लिये उसे डाक्टरेट (पीएचडी) करने की जरुरत नहीं होगी। हालांकि यह आदेश अभी प्रसारित नहीं हुआ है लेकिन इसका पूरा मसौदा तैयार कर लिया गया है। फरवरी के प्रथम सप्ताह में आदेश प्रसारित करके इसकी गाइड लाइन तय कर दी जायेगी। सरकार के इस मसौदे पर अभी से उंगलियां उठना शुरु हो गई हैं। उच्च शिक्षण संस्थानों में पीएचडी धारक एवं नेट क्वालीफाई सहायक प्राध्यापकों की एक अलग गरिमा होती है। उनके द्वारा दी गई शिक्षा का विशिष्ट स्थान होता है। ऐसे प्राध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये बच्चे गुणवक्तायुक्त शिक्षा पाकर राष्ट्र निर्माण में अपना अमूल्य योगदान देते हैं। इस मानक को बनाये रखने के लिये यह जरूरी है कि उच्च शिक्षा के मामले में कोताही नहीं बरती जानी चाहिये। आग में तपकर सोने में निखार आता है। देश के कृषि उत्पादन में कृषि शिक्षा का प्रमुख योगदान है। दिनों-दिन बढ़ रही आबादी के लिये खाद्यान्न उत्पादन गुणवत्तायुक्त कृषि शिक्षा ही उपलब्ध करा सकती है। वर्तमान में देश की कृषि शिक्षा अत्यधिक दयनीय एवं चिंतनीय स्थिति में है। वर्ष 1990 के पश्चात कृषि शिक्षण संस्थानों में नयी भर्तियां नहीं की गई है। उसका असर यह हुआ कि वर्तमान में 60 प्रतिशत से अधिक शैक्षणिक अमला सेवानिवृत्त हो चुका है। एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2027 तक देश के शीर्ष कृषि अनुसंधान संस्थानों में 75 प्रतिशत पद रिक्त हो जाएंगे। यही हाल कृषि महाविद्यालयों की है। यहां पर कृषि शिक्षा देने वाले सहायक प्राध्यापक एवं अन्य संवर्ग के प्राध्यापकों के पद पहले से ही रिक्त हैं। सरकार को इस दिशा में गंभीरता से विचार करना चाहिये। कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग में नये वैज्ञानिक एवं शैक्षणिक संवर्ग की नियुक्तियां की जानी चाहिए। ताकि भविष्य के लिये खाद्यान्न आपूर्ति का सुनियोजित प्रबंध किया जा सके।

# एक कमरे में उगा सकते हैं मशरुम

## मशरूम उत्पादन पर प्रशिक्षण का आयोजन

**ग्वालियर।** स्वरोजगार का सबसे आसान और सरल तरीका मशरुम की खेती करना है। जिसमें कम लागत में अच्छा मुनाफा ले सकते हैं। मशरुम की खेती के लिए आपको एक कमरे की आवश्यकता है। एक कमरे की जगह में कम साधन और मात्र 5 से 10 हजार की लागत में हर माह 10 से 50 हजार का मशरुम उगा सकते हैं। खास बात यह है कि यह खेती दो माह के प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद कोई भी व्यक्ति कर सकता है। यह बात राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रमुख व वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. एस.एस. कुशवाह ने प्रशिक्षण सभा को संबोधित करते हुए कही। डा. कुशवाह ने प्रतिभागियों को आर्या परियोजना के उद्देश्यों से अवगत कराया तथा ग्वालियर जिले में मशरूम उत्पादन की अपार संभावनाओं के बारे में विस्तार से चर्चा की।

युवाओं को स्वरोजगार हेतु कौशल विकास करने, पोषण आवश्यकताओं को पूरा करने एवं कृषक समुदाय के आर्थिक उन्नयन के उददेश्य से राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय- कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालियर द्वारा आर्या परियोजना के अर्न्तगत उन्नत मशरूम उत्पादन तकनीकी पर पाँच दिवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिसमें जिले के युवाओं एवं युवतियों की सक्रिय भागीदारी रही।

प्रशिक्षण के दौरान डा. मिश्रा ने प्रतिभागियों को मशरूम उत्पादन इकाई स्थापित करने के लिए विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की सैद्धान्तिक एवं प्रायोगात्मक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बंद कमरे या झोपड़ी में मशरूम का उत्पादन आसानी से किया जा सकता है। इसके उत्पादन हेतु ज्यादा स्थान की आवश्यकता नहीं होती है। बांस के रैक बनाकर या टांगकर कम जगह में अधिक मशरूम का उत्पादन किया जा सकता है। उत्पादन लागत को कम करने के लिए मौसमी भूसे का आधार के रूप में भी प्रयोग किया जा सकता है। मशरुम का प्रशिक्षण करने तथा मूल्य संवर्धित उत्पादों जैसे मशरूम का अचार, बिस्कुट, मुरब्बा, पापड़, बड़ी, चटनी इत्यादि को तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से बताया गया। केन्द्र की मशरूम उत्पादन इकाई में युवाओं को बटन व ऑयस्टर मशरूम उत्पादन के सजीव प्रदर्शन का अवलोकन भी कराया गया।

आर्या परियोजना के अर्न्तगत आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए तथा मशरूम उत्पादन व्यवसाय प्रारंभ करने की प्रेरणा हेतु प्रशिक्षणार्थियों को ऑयस्टर मशरूम स्पॉन किट का वितरण भी किया गया। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. शैलेन्द्र सिंह कुशवाह द्वारा वर्तमान में कृषि परिवेश में कौशल विकास प्रशिक्षणों की उपयोगिता पर प्रकाश डाला, साथ ही जिले में मशरूम उत्पादन की अपार संभावनाएं बताई।

# सरसों में कीट प्रबंधन पर किसानों को प्रशिक्षण

**नर्मदापुरम।** कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर, नर्मदापुरम द्वारा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अंतर्गत तिलहन आदर्श ग्राम परियोजना एवं संकुल अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन तिलहन में चयनित ग्रामों में समन्वित पोषक तत्व व समन्वित कीट एवं रोग प्रबंधन पर प्रशिक्षण दिया गया। केसला ब्लाक में तिलहन आदर्श ग्राम झुनकर एवं संकुल अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन तिलहन के ग्राम चनागड़ व कोटमीमाल में सरसों फसल में पोषक तत्व एवं कीट प्रबंधन पर प्रशिक्षण के बाद किसानों को आदान सामग्री वितरित की गई। इसके अलावा लगाये गये प्रदर्शनों का किसानों के प्रक्षेत्र पर जाकर भ्रमण किया एवं समसामयिक सलाह दी।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र गोविन्दनगर के कृषि वैज्ञानिक नोडल अधिकारी ब्रजेश कुमार नामदेव ने सरसों में कीटों की पहचान एवं समन्वित कीट प्रबंधन पर किसानों को प्रशिक्षण दिया तथा वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं नोडल तिलहन आदर्श ग्राम डॉ. संजीव कुमार गर्ग द्वारा सरसों में पोषक तत्व प्रबंधन एवं तिलहनी फसलों के महत्व के बारे में जानकारी दी। इसके बाद वैज्ञानिक डा. देवीदास पटेल द्वारा सरसों के बीज उत्पादन की बारीकियों को किसानों के साथ साझा किया जिससे दी गई उन्नत किस्मों के बीज बनाकर अधिक लोगों तक बीज को पहुंचाया जा सके। इन कार्यक्रम मोहित पटेल, असरथ धुर्वे सहित 135 किसान एवं महिला किसानों की उपस्थिति रही।


## मनावर जिला धार में

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।
**रमेश एम. पटेल**
ग्राम- जोतपुर, तहसील- मनावर
जिला-धार ( म.प्र. )
मो. 8959691006


## अनमोल वचन

अनुशासन वह चीज है जिस पर जीवन मर्यादा का समुद्र लहराता है।
– जय शंकर प्रसाद

## पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

माघ कृष्ण/माघ शुक्ल पक्ष विक्रम संवत 2081 ईस्वी सन् 2024-25

| दिनांक | दिन | तिथि | व्रत/ त्यौहार |
|---|---|---|---|
| 21 जनवरी 25 | मंगलवार | माघ कृष्ण-07 | |
| 22 जनवरी 25 | बुधवार | माघ कृष्ण-08 | |
| 23 जनवरी 25 | गुरुवार | माघ कृष्ण-09 | |
| 24 जनवरी 25 | शुक्रवार | माघ कृष्ण-10 | |
| 25 जनवरी 25 | शनिवार | माघ कृष्ण-11 | षटतिला एकाशदी व्रत |
| 26 जनवरी 25 | रविवार | माघ कृष्ण-12 | तिल द्वादशी, गणतंत्र दिवस |
| 27 जनवरी 25 | सोमवार | माघ कृष्ण-13 | शिव चतुर्दशी, प्रदोष व्रत |
| 28 जनवरी 25 | मंगलवार | माघ कृष्ण-14 | |
| 29 जनवरी 25 | बुधवार | माघ कृष्ण-30 | माघी मौनी अमावस्या |
| 30 जनवरी 25 | गुरुवार | माघ शुक्ल-01 | पंचक 8.21 रात से |
| 31 जनवरी 25 | शुक्रवार | माघ शुक्ल-02 | पंचक |
| 01 फरवरी 25 | शनिवार | माघ शुक्ल-03 | पंचक |
| 02 फरवरी 25 | रविवार | माघ शुक्ल-04 | विनायकी चतुर्थी, पंचक |
| 03 फरवरी 25 | सोमवार | माघ शुक्ल-05 | बसंत पंचमी, पंचक |

# चने के रोग की पहचान तथा उनका समेकित प्रबंधन

● डॉ. कैलाश नारायण गुप्ता
वैज्ञानिक, पौधा रोग
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय,
जबलपुर (म.प्र.)

**देश में चने की खेती मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, महराष्ट्र, छत्तीसगढ़, पंजाब, हरियाणा, बिहार, और कर्नाटक राज्यों में खेती की जाती है। राष्ट्रीय स्तर पर क्षेत्रफल और उत्पादन दोनों की दृष्टि से मध्यप्रदेश, राजस्थान और उत्तरप्रदेश राज्य क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर आते हैं।**

मध्यप्रदेश राज्य में चने की खेती मुख्य रूप से गुना, विदिश, शाजापुर, उज्जैन, सागर, छत्तरपुर, नरसिंहपुर, शिवपुरी, सीहोर, देवास, राजगढ़ आदि जिलों में की जाती है। चने के उत्पादन को प्रभावित करने वाले कारकों में रोगों का एक प्रमुख स्थान है। चने की फसल में लगने वाले प्रमुख रोगों जैसे म्लानि (उकठा), शुष्क मूल विगलन, आर्द्र मूल विगलन, ग्रीवा विगलन, तना विगलन और झुलसा से प्रतिवर्ष 20-30 प्रतिशत पैदावार में नुकसान होता है।

## रोगों की पहचान

**म्लानि/उकठा :** इस रोग से ग्रस्त चने के पौधों की शीर्ष उपरी टहनियां तथा पत्तियां झुक जाती हैं तथा धीरे-धीरे पूरा पौधा मुरझाकर सूख जाता है। रोगी पौधे की जड़ को बीच से लंबवत् दो भागों में फाड़कर देखने पर इनके बीच का भाग भूरा से काला दिखता है। रोग कारक कवक मृदा में तथा संक्रमित चने के बीजों पर कई वर्षों तक जीवित रहता है।

**शुष्क मूल विगलन/शुष्क जड़ सड़न:** इस रोग से ग्रसित पौधों की पत्तियों और तनों का रंग भूसे के समान पीला हो जाता है। मूसला जड़ से लगी द्वितीयक जड़ें विगलित तथा सूखी हुई दिखाई देती हैं। असिंचित क्षेत्रों में जहां चने में फूल के आने की अवस्था के दौरान दिन का तापमान 30 डिग्री से अधिक हो, यह रोग अधिक उग्र रूप में दिखाई देता है।

**आर्द्र मूल विगलन:** रोगी पौधों का रंग पीला पड़ जाता है तथा ग्रीवा के उपर तनों पर गहरे काले रंग के क्षति स्थल बन जाते हैं। जड़ें सड़कर काली हो जाती हैं। धान व मक्का के उपरांत चने की फसल लेने पर इस रोग का प्रकोप ज्यादा देखने को मिलता है।

**ग्रीवा विगलन/कालर राट:** संक्रमित पौधे का रंग पीला पड़ जाता है व जड़ से लगा हुआ (ग्रीवा) तने का निचला भाग सड़ जाता है। इस रोग का प्रकोप भूमि में अधिक नमी, सतह पर अर्ध-सड़े कार्बनिक पदार्थों की उपस्थिति तथा 28-30 डिग्री से. तापमान होने पर अधिक होता है।

**तना विगलन/स्केलेरोटिनिया अंगमारी:** इस रोग का प्रकोप पौधों की जड़ों को छोड़कर सभी भागों पर होता है। रोगी तने पर भूसे जैसे रंग के धब्बे बनते हैं जो बढ़कर तने को चारों ओर से घेर लेते हैं। नम वातावरण रहने पर कवक की रूई जैसी सफेद रचना रोगी भागों पर दिखलाई पड़ती है। रोगी पौधा पीला पड़ कर सूख जाता है।

**झुलसा/एस्कोकाइटा ब्लाइट:** संक्रमित बीजों वायु द्वारा फैलने वाला एक अतिघातक रोग है। पत्तियों, तनों व शाखाओं पर भूरे रंग के धब्बे बनते हैं जिनका बाहरी किनारा गहरे रंग का होता है। पत्तियों तथा फलियों पर ये धब्बे गोलाकार व तनों तथा शाखाओं पर लम्बाकार होते हैं। धब्बे आपस में मिलकर पूरे पौधों के झुलसा देते हैं।

**किट्ट:** पत्तियों की निचली सतह पर छोटे, आकार में गोल से अंडाकार, भूरे रंग के चकत्ते/स्फोट बनते हैं जो फूटकर चूर्ण में बदल जाते हैं। रोग के बढ़ने पर ये चकत्ते तनों तथा फलियों पर भी दिखने लगते हैं। यह हवा जनित रोग है।

**आल्टरनेरिया ब्लाईट रोग:** यह बीमारी फूल और फलियाँ लगने के समय आती है। आरम्भ में पत्तों पर बीमारी के धब्बे छोटे, गोल और बैगनी रंग के होते हैं। अधिक आद्र मौसम में बढ़कर एक दूसरे के साथ जुड़ते हुये सारे पत्तों पर फैल जाते हैं और पत्तियाँ शीघ्र मुरझा जाती हैं। प्रभावित फूल मर जाते हैं। फलियों पर यह धब्बे गोलाकार और अनियमित रूप से बिखरे होते हैं। प्रभावित बीज सिकुड़ जाते हैं।

**काला मूल विगलन ( ब्लैक रूट रॉट ) ( फ्यूजेरियम सोलेनाई ):** जड़ से जुडे तने के ऊपरी भाग पर काले भूरे धब्बों का पाया जाना एवं जड़ों का काला पड़ना व सड़ जाना। इस रोग के प्रमुख लक्षण हैं- मूल गांठ सूत्र कृमि रोग प्रभावित पौधों में बोनापन, पीलापन, एवं उपज कम होना, जड़ों पर गांठें (गाल्ज) उत्पन्न हो जाती है, जिससे उपज कम हो जाती है।

## रोगों का प्रबंधन

### उन्नतशील रोग प्रतिरोधी किस्में उगाये

**उकठा:** पूसा 362, पूसा 372, सम्राट (जी.एन.जी. 469), आधार (आर.एस.जी. 963), उदय (के.पी.जी. 59), हरियाणा चना 1 (एच 82-2), हरियाणा चना 3 (एच 86-18), जे.जी. 322, जी.पी.एफ 2, जे.जी.315। झुलसा/एस्कोइटा: पूसा 256, सी- 235, पंत जी 114, पी.बी.जी.1, जी.एन.जी. 469, एच 00-108। जड़ व तना विगलन: हरियाणा चना 1 (एच 82-2), एच 00-108, एच 99-9, उदय, सम्राट, वरदान। शुष्क जड़ सड़न/ स्केलेरोटिनिया अंगमारी: जी 24, पंत जी. 114, सी 235, जे.जी. 315, एस 617 बीज उपचार वाबिस्टीन+थिरम (1:1) 2.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज या ट्राईकोडर्मा के उत्पाद (4.0 ग्राम)+कार्बाक्सिन (2.0 ग्राम) प्रति कि.ग्रा.।

### बीजरासायनिक दवाओं का छिड़काव :

(1) झुलसा रोग प्रकट होने पर क्लोरोथेलोनिल (कवच) का छिड़काव (2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी) 15 दिन के अंतराल पर फूल आने के समय से आवश्यकतानुसार करें।

(2) उकठा / शुष्क जड़ सड़न के लिये रोग के आरंभिक लक्षण में कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी मिलाकर छिड़काव करें। (3) एस्कोकाइटा अंगमारी रोग के आरंभिक लक्षण में कापर आक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. या मैंकोजेब 75% डब्ल्यू.पी. की 2.5 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

**सस्य क्रियायें:** (अ) चने की बुआई नवम्बर के प्रथम पखवाड़े में 8-10 से.मी. की गहराई पर करें। (ब) कम्पोस्ट या गोबर की सड़ी हुई खाद का प्रयोग प्रतिवर्ष फसल की बुआई से 2-3 सप्ताह पहले करें। (स) ग्रीष्म ऋतु के मई व जून महीने में मिट्टी पलटने वाले हल से खेत की गहरी जुताई करें। (द) बुआई के पूर्व खेत से पिछली फसल के अवशेष और खरपतवार नष्ट कर दें।

जल निकास की उचित व्यवस्था करें। उचित फसल चक्र अपनायें। फसल की अत्यधिक वृद्धि रोकें।

# मसूर में एकीकृत कीट एवं रोग प्रबंधन


- **डॉ. के. एन. गुप्ता**
  वैज्ञानिक, पौधा रोग
  तिल एवं रामतिल परियोजना
- **शुभम मिश्रा**
  (पीएचडी स्कालर) पादप रोग
  जवाहरलाल नेहरू कृषि विवि., जबलपुर


**रबी मौसम में बोई जाने वाली फसलों में मसूर एक महत्वपूर्ण फसल है। मसूर मध्यप्रदेश में लगभग 655 हजार हैक्टेयर क्षेत्र में उगाई जाती है। इसका उपयोग दाल में अतिरिक्त अन्य व्यंजन बनाने में किया जाता है। इसमें प्रोटीन 242 प्रतिशत होता है। मसूर के पौधे को हरे चारे के रूप में जानवरों को खिलाया जाता है, इसका भूसा भी अत्यंत पौष्टिक होता है।**

दलहनी फसल होने के कारण इसमें राइजोबियम बैक्टीरिया पाया जाता है, जो भूमि सुधार में सहायक होता है। मसूर की फसल को कीट एवं रोगों से न बचाया जाये तो काफी हद तक नुकसान होने की संभावना रहती है, मसूर में निम्नलिखित कीट एवं रोग पाये जाते हैं। जिनका विवरण नीचे दिया जा रहा है।

**कटुआ इल्ली :** इस कीट का प्रकोप रात्रि के समय अधिक होता है। इल्लियाँ पीले हरे से गहरे भूरे रंग की होती है। इल्ली पौधों को रात्रि के समय जमीन की सतह से काटती है और उगते हुये पौधों को अथवा बढ़ती हुई शाखाओं को काटकर नुकसान पहुँचाती है।

**नियंत्रण:** लेमडा साइलोथ्रिरन 0.1 मि.ली. अथवा थाइमिथाक्सम 0.2 मि.ली. पैराथियान डस्ट 2 प्रतिशत प्रति हैक्टेयर का छिड़काव करना चाहिये।

- माहू इस कीट के प्रौढ़ एवं शिशु दोनों ही पौधों के कोमल भाग पर पत्तियों एवं तनों से रस चूसते हैं। जिससे पौधे पीले पड़ने लगते है। अंत में पौधों की वृद्धि रूक जाती है। अधिक प्रकोप होने पर पौधे सूख भी जाते हैं।

**नियंत्रण :** फास्फेमिडान 300 मिली अथवा क्लीरोपाइरिफास 2-3 मिली/अथवा लेमडा साइनोथ्रिरन 0.1 मिली. किसी एक दवा का 600-800 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। आवश्यक होने पर 15-20 दिन में पुन: छिड़काव करें।

**मटर/मसूर की फली बेधक:** इस कीट की इल्ली हानिकारक होती है जो कि विकसित हो रही फली एवं दानों को खाती है। पूर्ण विकसित फली में इल्ली के प्रवेश स्थान पर भूरा धब्बा बन जाता है। आगे चलकर यह जाला बनाती है, जाले में विष्ठा भी दिखाई देती है।

**नियंत्रण :** मोनोकोटाफास 600 मिली अथवा क्यूनालफॉस 1000 मिली की 600-800 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें अथवा क्यूनालफास 1.5 प्रतिशत डस्ट का 20-25 किग्रा प्रति हैक्टेयर के हिसाब से भुरकाव करें।

**रतुआ रोग:** सर्वप्रथम पत्तियों की निचली सतह व पर्णवृत्त पर हल्के पीले रंग के धब्बे दिखाई देते हैं जो कि बाद में भूरे रंग के हो जाते हैं। पत्तियाँ सूख जाती है। रोग का आक्रमण निचले सतह से शुरू होकर ऊपरी क्षेत्र तक फैल जाता है।

**नियंत्रण :** रोगी फसल के अवशेष जलाकर नष्ट कर दें। बुवाई जल्दी करें। बीजोपचार बोने से पूर्व मेंकोजेब 3 ग्राम प्रति किलो बीज से बीजोपचार करें। रतुआ निरोधक जातियाँ जैसे पंत, एल. 407, पंत एल. 639 पंत एल 236, पंत एल. 406 व नरेन्द्र मसूर-1 आदि की बुवाई करें। रोग का अधिक प्रकोप होने पाइराक्लोस्ट्रोबिन+ इपोक्सीकोनाजोल 5 ग्रा/लीटर का घोल बनाकर छिड़काव करें।

**उकठा रोग:** यह भूमि जनक रोग है। इसमें उगते हुए पौधे भूमि से निकलने के पूर्व ही या तुरंत बाद मर जाते है। उगने के कुछ दिन बाद फफूँद का बन आक्रमण होने पर उनकी जड़ें भूरी हो जाती है। पौधा का ऊपरी भाग लटक जाता है और अंत में मर जाता है।

**नियंत्रण :** गर्मी में गहरी जुताई करें। खेत में फसल के अवशेष न रहने दें। फसल चक्र अपनायें 2.5 ग्राम बैविस्टीन से प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करके ही बुवाई करें अथवा ट्राइकोडर्मा बिरडी 5-10 ग्राम प्रति किलो ग्राम बीज उपचार करें एवं बुवाई के पूर्व 4 किग्रा ट्राइकोडर्मा बिरडी को गोबर की खाद में मिला कर प्रति हेक्टेयर खेत में मिलावें। उकठा निरोधक जातिया जैसे जे.एल. 1, पी.एल.406 की बुवाई करें।

**पाउडरी मिल्ड्यू:** पत्तियों की निचली सतह पर चूर्णी कवक के सफेद धब्बे बन जाते हैं। जो बाद में बड़े आकार के होकर पूरी पत्तियों पर फैल जाते हैं, संक्रमित पत्तियां पीली पड़कर मुरझा जाती है और अंत में गिर जाती है। रोग के अधिक प्रकोप होने पर पौधा मर जाता है।

**नियंत्रण:** फसल अवशेष को नष्ट कर दें। 20 किग्रा गंधक चूर्ण प्रति हैक्टेयर की दर से संकमित खेत में भुरकाव करें। रोग के शुरू होने पर सल्फेक्स 0.3 प्रतिशत या बेनोमाइल 0.2 प्रतिशत का छिड़काव करें।

आवश्यकता पड़ने पर 15 दिन में दुबारा छिड़काव करें। रोग निरोधक जातियों की बुवाई करें फसल चक्र अपनाना चाहिये। उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखा जाये तो मसूर में लगने वाले कीड़ों एवं रोगों से होने वाले नुकसान को काफी हद तक बचाया जा सकता है।

# राष्ट्रीय युवा दिवस का आयोजन

**रीवा।** कृषि महाविद्यालय, रीवा में राष्ट्रीय युवा दिवस युवा दिवस मनाया गया। महाविद्यालय के डीन डॉ. एस.के. त्रिपाठी छात्रों को विवेकानन्द की शिक्षाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और उन्हें एक प्रगतिशील राष्ट्र की दिशा में काम करने के लिए कहा। इसके अलावा उन्होंने राष्ट्रीय युवा दिवस के महत्व को

बताया क्योंकि यह भारत के युवाओं को समाज के विकास में भाग लेने के लिए एकजुट करने में मदद करता है। एनएसएस समन्वयक डॉ. मनीषा द्विवेदी छात्रों को देश के प्रति उनकी सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी से अवगत कराती हैं। कार्यक्रम में महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं एवं स्टाफ ने भाग लिया।

# प्याज की उन्नत खेती

● डॉ. एस.के. त्यागी
कृषि विज्ञान केन्द्र, खरगौन (म.प्र.)

**ब ल्ब वर्गीय सब्जियों में प्याज का प्रमुख स्थान है। प्याज का उपयोग सब्जी, मसाले, सलाद तथा आचार तैयार करने के लिए किया जाता है। भारत में महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, हरियाणा एवं उत्तरप्रदेश प्याज उत्पादन में अग्रणी राज्य है। भारत में 1051.5 हजार हेक्टेयर में प्याज की खेती की जाती है, जिससे 16813 हजार मीट्रिक टन उत्पादन (2012-13) प्राप्त होता है।**

**जलवायु**- प्याज ठण्डे मौसम की फसल है। इसे सम जलवायु में अच्छी तरह से उगाया जा सकता है। प्याज की फसल के लिए बल्ब बनने के पूर्व 12- 21 डिग्री सेन्टीग्रेड एवं बल्ब के विकास हेतु 15- 25 डिग्री सेन्टीग्रेड तापक्रम उपयुक्त रहता है। प्रारम्भिक अवस्था में कम तापक्रम बोल्टिंग को बढ़ावा देता है एवं तापक्रम में अचानक बढ़ोत्तरी से शीघ्र परिपक्वता आती है, जिससे बल्ब का आकार छोटा रह जाता है।

**मृदा**- प्याज सभी प्रकार की मृदाओं में उगायी जा सकती है, लेकिन कन्दीय फसल होने के कारण भुरभुरी तथा उत्तम जल निकास वाली बलुई दोमट मिट्टी सर्वोत्तम होती है।

## उन्नत किस्में-

**एग्रीफाउण्ड लाइट रेट**- इस किस्म के कंद गोल, हल्के लाल 4- 6 सेमी व्यास के होते हैं। यह किस्म रबी के लिए अनुशंसित की जाती है। फसल रोपाई के 120- 125 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 300 क्विंटल प्रति हेक्टर है।

**एग्रीफाउण्ड डार्क रेड**- इस किस्म के कंद गोल, गहरे लाल, 4-6 सेमी व्यास के होते हैं। यह किस्म फसल रोपाई के 95-110 दिन में पककर तैयार हो जाती है। यह किस्म खरीफ के लिए उपयुक्त होती है। इस किस्म की औसत उपज 300 क्विंटल प्रति हेक्टर होती है।

**एन.एच.आर.डी.एफ. (रेड)**- यह किस्म वर्ष 2006 में विमोचित की गई है। इस किस्म की भारत के उत्तरी, केन्द्रीय एवं पश्चिमी भागों में रबी मौसम में उगाने के लिए अनुशंसा की गई है। इस किस्म के बल्ब आर्कषक लाल रंग के ग्लोबाकार, गोल, 5-6 सेमी. व्यास के होते हैं। एक बल्ब का औसतन वजन 100-120 ग्राम होता है। इसमें कुल घुलनशील ठोस 13-14 प्रतिशत पाया जाता है। पौधों की पत्तियाँ गहरे हरे रंग की होती हैं। यह किस्म प्रमुख बीमारियों के प्रति मध्यम अवरोधिता रखती है। रोपाई के 115-120 दिनों में फसल पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 250-300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

**नाफेड 53**- इस किस्म के कंद गोल, गहरे लाल रंग के होते हैं। फसल रोपाई के 90 दिन बाद पककर तैयार हो जाती है। यह किस्म खरीफ के लिए अनुशंसित की जाती है। इस किस्म की औसत उपज 250- 300 क्विंटल प्रति हेक्टर होती है।

**पूसा रेड**- यह किस्म 1978 में विमोचित की गई है। इस किस्म के कंद लाल मध्यम आकार के गोल होते हैं। फसल रोपाई के 140- 145 दिन बाद पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की संग्रहण क्षमता अधिक होती है। यह किस्म रबी के लिए अनुशंसित है। इसकी औसत उपज 250- 300 क्विंटल प्रति हेक्टर है।

**पूसा माधवी**- यह किस्म 1989 में विमोचित की गई है। कन्द मध्यम से बड़े आकार के गोलाई लिए हुए चपटे, हल्के, लाल रंग के होते हैं। कुल घुलनशील ठोस 11-13 प्रतिशत होता है। संग्रहण क्षमता अच्छी होती है। फसल रोपाई के 130-135 दिनों बाद पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 350 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

**अर्का कल्याण**- इस किस्म के बल्ब गोल, चपटे, ग्लोब आकृति के होते हैं। इसके बाहरी शल्क गहरे गुलाबी रंग के तथा अंदर के शल्क रसदार, गूदेदार एवं सकेन्द्रक होते हैं। इसमें कुल घुलनशील ठोस 10.5-12 प्रतिशत होता है। फसल बीज बोने के 140 दिनों बाद तैयार हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 470 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह खरीफ के लिए उपयुक्त किस्म है।

**अर्का प्रगति**- इस किस्म के कंद, ग्लोब आकार के, पतली गर्दन वाले एवं गहरे गुलाबी रंग के होते हैं। इसके शल्क गूदेदार एवं बहुत तीखे होते हैं। इसमें कुल घुलनशील ठोस 10.5-12.5 प्रतिशत होता है। यह रबी एवं खरीफ दोनों मौसम के लिए उपयुक्त किस्म है। बीज बोने के 130 दिन बाद इसके कंद खुदाई के लिए तैयार हो जाते हैं। इस किस्म की औसत उपज 450 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

**अर्का निकेतन**- इस किस्म के कंद भी ग्लोब आकार के पतली गर्दन वाले एवं बाहरी शल्क लुभावने गुलाबी रंग के होते

हैं। इसमें कुल घुलनशील ठोस 11-14 प्रतिशत होता है। यह किस्म खरीफ एवं रबी दोनों मौसमों के लिए उपयुक्त है। इसकी भण्डारण क्षमता अच्छी है। इस किस्म की औसत उपज 420 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

**एग्रीफाउण्ड रजिं**- इस किस्म के बल्ब 2.5-3.5 सेमी. व्यास के होते हैं। यह किस्म रोपाई के 95-110 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 190-200 क्विंटल प्रति हेक्टर है। यह किस्म कोलार, बेंगलुरू (कर्नाटक) एवं कुड्या (आन्ध्रप्रदेश) में उगाने के लिए विमोचित की गई है।

**अर्का बिन्दु**- इस किस्म के बल्ब 2.5- 3.5 सेमी व्यास के होते हैं। यह किस्म 100 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 250 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म को रबी मौसम में कर्नाटक में उगाने के लिए विमोचित किया गया है।

**बसबन्त 780**- यह किस्म 100-110 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 200-250 क्विंटल प्रति हेक्टर है। इस किस्म को खरीफ मौसम में महाराष्ट्र में उगाने के लिए विमोचित किया गया है।

**हिसार-2**- यह किस्म 165 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 200-500 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म रबी मौसम में हरियाणा एवं पंजाब में उगाने के लिए विमोचित की गई है।

**कल्याणपुर रेड राउण्ड**- यह किस्म 140-145 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 250-300 एकड़ प्रति क्विंटल प्रति हेक्टेयर है यह किस्म रबी मौसम में उत्तरप्रदेश में उगाने के लिए विमोचित की गई है।

**एन-2-4-1**- इस किस्म के बल्ब 4-6 सेमी व्यास के होते हैं। यह किस्म 140-145 दिनों में परिपक्व हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 250-300 क्विंटल प्रति हेक्टर है। यह किस्म जोन- 4,6,7 में उगाने के लिए विमोचित की गई है।

**पंजाब रेड राउण्ड**- इस किस्म के बल्ब मध्यम से बडे आकार के होते हैं। यह एक शीघ्र पकने वाली किस्म है। इस किस्म की औसत उपज 300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म को रबी मौसम में पंजाब में उगाने के लिए विमोचित किया गया है।

**पंजाब सलेक्षन**- इस किस्म के पौधे 55- 65 सेमी उँचे, बल्ब 5-6 सेमी व्यास के एवं 50-70 ग्राम वजन के होते हैं। इस किस्म की औसत उपज 200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

**पूसा व्हाइट फ्लेट**- यह किस्म 1977 में विमोचित की गई है। इस किस्म के कंद सफेद रंग के मध्यम से बड़े आकार के होते हैं। यह किस्म रोपाई के 120- 130 दिन बाद पककर तैयार हो जाती है। यह किस्म रबी में बुवाई के लिए अनुशंसित की जाती है। इस किस्म की औसत उपज 300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

**पूसा व्हाइट राउण्ड**- इस किस्म के कंद भी सफेद रंग के होते हैं। यह किस्म रोपाई के 125-130 दिन बाद पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की भण्डारण क्षमता अच्छी होती है। यह किस्म औसतन 300 क्विंटल प्रति हेक्टर उपज दे देती है।

**पंजाब-48**- यह किस्म 140 दिनों में परिपक्व हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 250-300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म सुखाने के लिए उपयुक्त है। इस किस्म को सुतलज-गंगा के उप आद्रीय मैदानी भागों में उगाने के लिए विमोचित किया गया है।

**उदयपुर-102**- इस किस्म के बल्ब 4.5- 6.5 सेमी व्यास के होते हैं। यह किस्म रोपाई के 120 दिनों में परिपक्व हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 300-350 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म रबी मौसम में राजस्थान में उगाने के लिए विमोचित की गई है।

**एग्रीफाउण्ड व्हाइट**- इस किस्म के कंद मध्यम आकार के सफेद एवं 55-60 ग्राम वजन के होते हैं। यह किस्म 90 दिनों में परिपक्व हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 100 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

**फुले सफेद**- इस किस्म के कंद ग्लोबाकार, सफेद रंग के होते हैं। इस किस्म को 1994 में विमोचित किया गया है। कुल घुलनशील ठोस 13 प्रतिशत पाया जाता है। इस किस्म की औसत उपज 250-300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म रबी मौसम में उगाने के लिए अनुशंसित की गई है।

**एन-257-9-1**- यह किस्म 140 दिनों में परिपक्व हो जाती हैं। यह सुखाने के लिए उपयुक्त है। इस किस्म को रबी मौसम में जोन 7 में उगाने के लिए विमोचित किया गया है। इस किस्म की औसत उपज 300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

**अर्लीग्रेनो**- इस किस्म के कंद 7-8 सेमी व्यास के होते हैं। फसल 95-110 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। यह किस्म सलाद के लिए अच्छी है। इस किस्म की औसत उपज 500-600 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म सभी क्षेत्रों में उगाने के लिए विमोचित की गई है।

**फुले स्वर्णा**- इस किस्म के कंद मध्यम से बड़े आकार के, पीले रंग के होते हैं। कुल घुलनशील ठोस 11.5 प्रतिशत पाया जाता है। इस किस्म की भण्डारण क्षमता उच्च (4-6 माह ) होती है। यह किस्म यूरोपिय देशों में निर्यात के लिए उपयुक्त है। यह किस्म रबी मौसम में उगाने के लिए अनुशंसित की गई है। इस किस्म की औसत उपज 240 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

**स्पेनिश ब्राउन**- इस किस्म के बल्ब 2-3.5 से.मी. व्यास के होते हैं। यह किस्म 130-140 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 250-300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म ऊपरी हिमालय जोन में उगाने के लिए विमोचित की गई है।

**एग्रीफाउण्ड रेड**- इस किस्म के गुच्छों का आकार 7.15 से.मी. होता है यह किस्म रोपाई के 65-67 दिनों में तैयार हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 180-200 क्विंटल प्रति हेक्टर है। यह किस्म सभी मल्टीलायर प्याज उगाने वाले क्षेत्रों के लिए विमाचित की गई है।

**सी.ओ. 2**- इस किस्म के पौधे मध्यम उँचाई के होते हैं। प्रत्येक पौधे में 7-9 बल्ब होते हैं। यह किस्म 65 दिनों में तैयार हो जाती है किस्म तमिलनाडु में उगाने के लिए विमोचित की गई है।

**सी.ओ. 3**- इस किस्म के प्रत्येक पौधे में 8-10 बल्बलेट्स होते हैं। यह किस्म 65 दिनों में तैयार हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 160 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म तमिलनाडु में उगाने के लिए विमोचित की गई है।

**सी ओ. 4**- यह किस्म 60-65 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। प्रत्येक पौधे में 8-10 बल्ब लेट्स होते हैं। यह किस्म थ्रिप्स के प्रति मध्यम अवरोधिता रखती है। इस किस्म की औसत उपज 180 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म तमिलनाडु में उगाने के लिए विमोचित की गई है।

**भीमा सुपर**- इस किस्म के कंद ठोस, गोल, सकेन्द्रक, मध्यम लाल रंग के होते हैं। खरीफ में यह किस्म रोपाई के 108 दिन बाद एवं पछेती खरीफ में 115-120 दिन बाद फसल पककर तैयार हो जाती है। पछेती फसल को 4 माह तक भण्डारित किया जा सकता है। यह किस्म खरीफ एवं पछेती खरीफ मौसम में महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं गुजरात में उगाने के लिए उपयुक्त है। इसमें कुल घुलनशील ठोस 10-11 प्रतिशत पाया जाता है। इस किस्म की औसत उपज खरीफ में 260-280 क्विंटल/हेक्टैयर एवं पछेती खरीफ में 400-450 क्विंटल/हेक्टेयर है। **(शेष पृष्ठ 13 पर)**

● ब्राजील से डॉक्टर राजाराम त्रिपाठी, संस्थापक मां दंतेश्वरी हर्बल ग्रुप, तथा अध्यक्ष: अखिल भारतीय किसान महासंघ ( आईफा )

# तिल-तिल मरता किसान और तिल-गुड़ बांटता देश

## अन्नदाता की आहुति और सत्ता का मौन

**देश की माटी से जुड़ी ये गाथा आज किसी कटु व्यंग्य से कम नहीं। खनोरी बॉर्डर की धरती, जहां अन्नदाता जगजीत सिंह डल्लेवाल का शरीर क्षीण होता जा रहा है, वहीं सत्ता गलियारों में व्यस्तता का आलम है—ऐसा जैसे कोई सूखा पत्ता हिल भी जाए तो उनकी कुर्सियों के पायों पर संकट मंडराने लगे। डल्लेवाल जी के अनशन को पचास दिन पूरे होने को हैं। किसान अपने ट्रैक्टर-ट्रॉलियों के साथ धरने पर डटे हैं, और सत्ता के पहरेदार इतने व्यस्त हैं कि अन्नदाता की आवाज़ सुनने का वक्त नहीं मिल पा रहा। गजब ड्रामा चल रहा है कुर्सियां व्यस्त हैं, और किसान त्रस्त हैं।**

### उधर कुआं इधर खाई की त्रासदी

किसानों की यह लड़ाई किसी मोलभाव की नहीं, अपने हक की है। सरकार की ही गठित एमएस स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशें धूल फांक रही हैं। एमएसपी यानी कि न्यूनतम समर्थन मूल्य के गारंटी कानून की मांग को लेकर किसान वर्षों से संघर्षरत हैं। गौर करने वाली बात है कि किसान अपने उत्पादन का कोई अधिकतम विक्रय मूल्य वाला एमएसपी नहीं मांग रहा है। वह तो अपने उत्पादन का समुचित उत्पादन लागत और उसी पर जीवन यापन योग्य न्यूनतम समर्थन मूल्य की सरकार से गारंटी हेतु एक सक्षम कानून चाहता है, जिससे बिचौलिए व्यापारी उसके उत्पादन को औने-पौने कौड़ियों के मोल लूट ना खरीद पाएं, जैसा कि हर साल सारे किसानों के साथ होता रहा है। किसान यह तो कह ही नहीं रहे हैं कि न्यूनतम समर्थन मूल्य पर उनका 1 ग्राम उत्पाद सरकार खरीदें। इसलिए सरकार के खजाने पर इस कानून को लाने से एक रूपए भी अतिरिक्त खर्च नहीं होने वाला। सरकार को तो बस एक लाइन का एक स्पष्ट कानून बना देना है की न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम मूल्य पर कोई भी व्यापारी अथवा कंपनी किसान का किसी प्रकार का उत्पाद नहीं खरीद सकती पर इससे निश्चित रूप से मोटा चंदा देने वाले व्यापारी नाराज हो जाएंगे। यहीं पेंच फंसा हुआ है। सरकार किसी भी हालत में कॉर्पोरेट को नाराज करना नहीं चाहती। किसान कर्ज के जाल में फंसकर आत्महत्या कर रहे हैं, सरकार समस्या दूर करने की बात छोड़िए उनसे संवाद भी नहीं करती, दूसरी ओर

वही सरकार बड़े कॉर्पोरेट घरानों के 16 लाख करोड़ माफ करने में तनिक भी देर नहीं करती, यानि कि अमीरों के लिए तिजोरी और किसानों के लिए ताले? सवाल उठता है, देश के करोड़ों किसानों के कर्ज माफ करने से सत्ता की धमनियों में इतनी झनझनाहट क्यों होती है?

आखिर कैसे देश के भाग्य विधाता यह समझने से चूक जाते हैं कि किसानों को उनके 95 प्रतिशत उत्पादों के लिए लाभकारी मूल्य तक नहीं मिल पा रहा। न्यूनतम समर्थन मूल्य भी सरकार के अन्य वायदों की तरह दूर क्षितिज में धुंधला होता दिखता है।

### त्योहारों की धूम और किसान का संघर्ष

आज जब पूरा देश लोहड़ी, मकर संक्रांति और पोंगल की खुशियों में डूबा है, हर घर में तिल-गुड़ की मिठास बांटी जा रही है, वहीं दिल्ली की सरहद पर एक किसान तिल-तिल कर अपनी जान दे रहा है। ये कैसी विडंबना है कि देश के त्योहारों से अन्नदाता ही दूर होता जा रहा है, जिसकी मेहनत से ये पर्व सजे हैं? क्या किसानों के संघर्ष का कोई त्योहार नहीं होता जो सत्ता और समाज उसकी पीड़ा को समझ सके?

### कैसा संगठन : सोया शेर या मूक बधिर?

यह विडंबना ही है कि किसान नेता अपनी प्राणों की आहुति देने को तैयार हैं, पर कई किसान संगठन नींद में बेसुध पड़े हैं। उनकी चुप्पी सवाल खड़े करती है—क्या वे अपने उद्देश्यों से भटक चुके हैं या सत्ता के इशारे पर मौन साधे हुए हैं? जब किसानों का अस्तित्व संकट में है, तब ये संगठन अपनी प्रासंगिकता खोने के कगार पर हैं।

### जब रोम जल रहा था, नीरो बंसी बजा रहा था

सत्ता के गलियारों में शायद यह पुरानी कहावत गूंजती होगी। देश के किसान संकट में हैं, और सरकार जनहित की बात करने के बजाय अपनी राजनीति साधने में व्यस्त है। यह बात समझ से परे है कि आखिर सरकार अपने ही देश के किसानों के साथ संवाद करने से क्यों डरती है? सुप्रीम कोर्ट ने भले ही एक कदम उठाया हो, पर किसान आंदोलन का समाधान अदालतों के पास नहीं, बल्कि सत्ता के गलियारों में है।

### संवेदनशीलता की नई परिभाषा चाहिए

सरकार को यह समझना होगा कि डल्लेवाल जी के अनशन से उनकी शहादत का कलंक माथे से मिटाना असंभव होगा। किसान संगठनों को भी अपने कर्तव्य का निर्वहन करना चाहिए और डल्लेवाल जी के जीवन की रक्षा के लिए एकजुट होकर सार्थक पहल करनी चाहिए।

### गांधीवादी रास्ता और मौन सत्ता

किसान संगठनों की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे शांतिपूर्ण तरीके से संघर्ष को आगे बढ़ाएं। 45 किसान संगठनों के अराजनैतिक साझा मंच अखिल भारतीय किसान महासंघ के संयोजक डॉ. राजाराम त्रिपाठी की यह पहल स्वागत योग्य है कि वे सरकार से सकारात्मक वार्ता की मध्यस्थता हेतु तैयार हैं। उनका कहना है कि जल्द से जल्द चाहे कोई भी रास्ता निकाला जाए, पर हर हाल में इस किसान नेता की जान बचाई जानी चाहिए।

### कटुता बढ़ाने की जगह संवाद का पुल बनाएं

आज जरूरत इस बात की है कि सरकार और किसान संगठनों के बीच संवाद की खाई को पाटने का प्रयास किया जाए। यदि डल्लेवाल जी को कुछ हुआ तो सरकार और किसानों के संबंध कभी सुधर नहीं पाएंगे। सत्ता के लिए यह चेतावनी है कि अन्नदाता को नज़रअंदाज़ करना न केवल उनके लिए, बल्कि देश के भविष्य के लिए आत्मघाती साबित होगा। अब समय आ गया है कि सरकार और सोए पड़े किसान संगठन दोनों जागें। अन्यथा इतिहास उन्हें कभी माफ नहीं करेगा। अन्नदाता का कर्ज और उनकी मेहनत दोनों का सम्मान होना चाहिए—यही लोकतंत्र का धर्म है।

# सरकार पर भारी पड़ेगी डल्लेवाल की शहादत

## डॉ. त्रिपाठी ने प्रधानमंत्री से डल्लेवाल के जीवन सुरक्षा की अपील की

**रायपुर।** देशभर के किसानों के हक की लड़ाई लड़ रहे किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल पिछले 50 दिनों से भी अधिक समय से न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी के लिए आमरण अनशन पर बैठे हैं। उनकी स्थिति अब अत्यंत गंभीर हो चुकी है। सरकार की चुप्पी और टालमटोल नीति के कारण किसान समुदाय में गहरी चिंता व्याप्त है। ध्यान रहे कि डल्लेवाल की शहादत सरकार पर भी भारी पड़ेगी। इस विकट स्थिति को लेकर अखिल भारतीय किसान महासंघ (आईफा) के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. राजाराम त्रिपाठी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर तत्काल हस्तक्षेप की मांग की है।

डॉ. त्रिपाठी ने कहा कि संवाद से समाधान निकलता है, लेकिन अब सबसे पहले डल्लेवाल के जीवन की रक्षा करना जरूरी है। किसानों की आवाज को बार-बार अनसुना करने से उनकी पीड़ा हल नहीं होगी। यदि किसानों को उनका न्यायोचित अधिकार नहीं मिला तो यह देश के कृषि तंत्र के लिए विनाशकारी सिद्ध होगा। उन्होंने याद दिलाया कि जब प्रधानमंत्री गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तब उन्होंने स्वयं किसानों के हितों के लिए मुखर होकर न्यूनतम समर्थन मूल्य के महत्व की वकालत की थी। आज वही किसान आपके भरोसे की ओर आशा भरी नजरों से देख रहे हैं। देश के अन्नदाता न सिर्फ अपने परिवार बल्कि समूचे राष्ट्र को जीवनदायिनी अन्न उपलब्ध कराते हैं। उनके हितों की अनदेखी करना ऊसर खेत में हरियाली की उम्मीद करने जैसा है। एमएसपी की गारंटी न होने से किसानों को उनकी उपज का सही मूल्य नहीं मिल पाता, जिससे कर्ज और आत्महत्या की समस्या और बढ़ जाती है। डॉ. त्रिपाठी ने कहा कि सरकार को चाहिए कि संवेदनशीलता का परिचय देते हुए तुरंत पहल करे। डल्लेवाल का जीवन बचाना और किसानों की न्यायोचित मांगों पर सकारात्मक कदम उठाना न केवल राजनीतिक बल्कि मानवीय जिम्मेदारी भी है। महासंघ की ओर से हर सहयोग के लिए हम तत्पर हैं।

# किसानों को जागरूक करने किसान खेत पाठशाला का आयोजन

**नर्मदापुरम।** कलेक्टर सोनिया मीना के निर्देशानुसार रबी मौसम 2024-25 में गेहूं फसल कटाई के बाद जिले के ग्रामो में नरवाई में आग लगने की घटनाओं को नियंत्रित करना एवं नरवाई में आग लगने के दुष्परिणामों व पर्यावरण को होने वाली क्षति से कृषकों को जागरूक करने, ग्रीष्मकालीन मूंग के प्रतिस्थापन व वैकल्पिक फसलें चयन करने एवं संतुलित उर्वरक प्रबंधन के उद्देश्य से जिले के प्रत्येक ग्राम में 15 जनवरी 2025 से निरंतर प्रत्येक ग्राम में किसान खेत पाठशाला का आयोजन किया जा रहा है।

उप संचालक कृषि जे.आर. हेड़ाऊ ने बताया है कि किसान खेत पाठशालाओं के माध्यम से नरवाई का उचित प्रबंधन के अंतर्गत सुपर सीडर/हैप्पी सीडर से फसलों की बुआई करने, सिंचाई जल के उचित प्रबंधन में ड्रिप, स्प्रिंकलर को बढ़ावा देना, ग्रीष्मकालीन मूंग के स्थान पर मक्का, उड़द, तिल एवं सोयाबीन फसल अपनाने के लिये कृषकों को जागरूक किया जा रहा है? साथ ही किसानों को मृदा परीक्षण के महत्व और मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए जैविक उर्वरकों के उपयोग के विषय में जानकारी दी गई।उन्होंने बताया कि जिले में 261 ग्रामों में किसान खेत पाठशालाएं आयोजित की गई, जिसमें 4386 कृषकों की भागीदारी के साथ 330 जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति रही। जिले के समस्त किसान भाईयो से अपील की गई है कि ग्रामवार आयोजित किसान खेत पाठशालाओं में उपस्थित रहकर कृषि पद्धतियों पर बहुमूल्य जानकारी एवं शासन द्वारा चलाई जा रही जनकल्याण/कृषक कल्याण की योजनाओं का लाभ और सहायता प्राप्त करें।

## किसानों को सुगमता से ट्रैक्टर ऋण के लिए

# ACE और इंडियन बैंक के बीच समझौता

**लखनऊ।** किसानों को सशक्त बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुये लखनऊ में एक्शन कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट लिमिटेड (ACE) और इंडियन बैंक के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किये गये। इस साझेदारी के तहत इंडियन बैंक मिनिमम डॉक्यूमेंटेशन (केवाईसी और भूमि आधारित ऋण), कम ब्याज दर और तेजी से ऋण स्वीकृति जैसी सुविधायें डिजिटल तथा सामान्य दोनों के माध्यम से प्रदान करेगा।

**किसानों को आसान और किफायती ऋण सुविधा**

यह समझौता किसानों और अन्य ग्राहकों को ट्रैक्टर, हार्वेस्टर और अन्य कृषि उपकरणों की खरीद के लिये आसान ऋण सुविधा प्रदान करने पर केन्द्रित है। इसके माध्यम से ACE के उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उपकरणों के लिये ऋण सुविधा देशभर में इंडियन बैंक की सभी शाखाओं के माध्यम से उपलब्ध होगी।

इस अवसर पर ACE लिमिटेड के चीफ जनरल मैनेजर रवीन्द्र सिंह खनेजा और रिटेल विभाग के अंजनी ओझा ने कंपनी के उत्पादों की जानकारी दी। वहीं, इंडियन बैंक के सी.जी.एम. सुधीर कुमार गुप्ता (क्षेत्रीय महाप्रबंधक लखनऊ) ने बैंक की विशेष ऋण योजनाओं और उनके लाभों के बारे में विस्तार से चर्चा की। इस मौके पर ACE लिमिटेड के उत्तर प्रदेश रिटेल हेड्स विशाल सिंह और मोहित त्यागी, जोनल मैनेजर मनीष दीक्षित, डिविजनल मैनेजर शक्ति नाथ तिवारी एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

वहीं इंडियन बैंक से श्याम शंकर, डीजीएम तथा अमल सिन्हा, एजीएम (क्षेत्रीय महाप्रबंधक कार्यालय लखनऊ), प्रणेश कुमार, डीजीएम (जोनल मैनेजर लखनऊ), सतीश सोनकर, डीजीएम (जोनल मैनेजर, गोरखपुर) व उत्तर प्रदेश के अन्य वरिष्ठ बैंक अधिकारी उपस्थित थे। इस समझौते के माध्यम से भारतीय किसान अब ACE ट्रैक्टर, हार्वेस्टर और अन्य कृषि उपकरणों को इंडियन बैंक की विशेष ऋण योजनाओं के तहत आसानी से प्राप्त कर सकेंगे।

# आईपीएल की किसान संगोष्ठी आयोजित

**देवास।** देवास जिले के कन्नौद में देश की जानी-मानी उर्वरक प्रदाता कंपनी इंडियन पोटाश लिमिटेड के सौजन्य से विशाल किसान संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 2000 किसान बंधुओं ने सम्मिलित होकर लाभ लिया और कार्यक्रम को सफल बनाया। इस कार्यक्रम में कन्नौद खातेगांव के विधायक आशीष शर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। मुख्य अतिथि के रूप में मध्य प्रदेश राज्य विपणन संघ के मैनेजिंग डायरेक्टर आलोक सिंह (आईएएस) एवं देवास जिले के डी.डी.ए. गोपेश पाठक ने भी किसानों के बीच अपने विचार रखे और किसानों को उत्कृष्ट खेती करने एवं कम लागत में अधिक लाभ कमाने के तरीकों के विषय में जागरूक किया एवं नरवाई जलाने के नुकसान और आगे होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में चेताया। इंडियन पोटाश लिमिटेड के डी.जी.एम. (कृषि सेवा) डॉ. यू.एस. तेवतिया एवं कृषि विकास केंद्र देवास से डॉ. महेंद्र सिंह ने भी किसानों को जागरूक किया और मृदा परीक्षण एवं संतुलित खाद के उपयोग से होने वाले लाभों के बारे में बताया। कार्यक्रम में कंपनी के सीनियर रीजनल मैनेजर नितेश शर्मा ने किसान भाइयों को कंपनी द्वारा किसानों की सेवा में उत्कृष्ट कार्यों एवं विभिन्न प्रकार के उर्वरकों द्वारा किसानों के लिए उपलब्धता बनाए रखने के प्रति अपनी कटिबद्धता जाहिर की। विधायक आशीष शर्मा ने किसान भाइयों से निवेदन किया कि वे सरकार द्वारा चलाई जारी जा रही योजनाओं का भरपूर लाभ उठाएं। आलोक सिंह ने विपणन संघ एवं सहकारी केंद्रों में समय पर खाद उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। इस कार्यक्रम में मार्कफेड से इंदौर के जोनल मैनेजर अर्पित तिवारी, उज्जैन की जोनल मैनेजर स्वाति राय और देवास के जिला विपणन अधिकारी अंकित तिवारी ने भी हिस्सा लिया।

कार्यक्रम के क्रियान्वयन में डीलर खेती किसानी केंद्र के पार्टनर योगेश जाट, मनोज जाट, एग्री भविष्य के एम.डी. मुकेश जाट और आईपीएल कंपनी के मार्केटिंग ऑफिसर अमितेश मिश्रा, अमित श्रीवास्तव, फील्ड ऑफिसर इलियास खान और रामेक्वर पाटिल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

# ईगल सीड्स ने अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में लांच किये नये उत्पाद

**इंदौर।** विगत 4 वर्षों से निरंतर ईगल सीड्स एंड बॉयोटेक प्राइवेट लिमिटेड महाराष्ट्र एवं दक्षिण भारत के अपने डिस्ट्रीब्यूटर्स के साथ अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रें स का आयोजन अलग-अलग देशों में करता आ रहा है।

इस वर्ष यह आयोजन वियतनाम के हो-ची मिन्ह शहर में 10 से 14 जनवरी तक किया गया जिसमें पहली बार इस अवसर पर नए प्रोडक्ट्स का लॉन्चिंग कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश के लगभग 70 प्रमुख वितरक बंधु एवं कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री वैभव जैन, सेल्स एवं मार्केटिंग सीनियर वाईस प्रेजिडेंट श्री अनिल कोलते और साथ में जनरल मैनेजर मार्केटिंग एवं प्रोडक्ट डेवलपमेंट डॉ. अशोक गुप्ता बतौर कंपनी प्रतिनिधि भी साथ रहे। महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश से सेल्स टीम में जनरल मैनेजर सेल्स श्री विजय मोहोद के साथ उनके चारों रीजन के रीजनल मैनेजर बतौर श्री संजय साबले, श्री प्रसाद देशमुख, श्री राम जाधव एवं श्री सचिन राउत ने भाग लिया। पहले दिन कांफ्रेंस की थीम एक्सपान्डिंग हॉरिजोन्स पर थी। कांफ्रेंस का शुभारंभ फाउंडर चेयरमैन स्व. श्री राजेंद्र कुमार जैन को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए थीम प्रतीक की लॉन्चिंग के साथ किया। सेल्स एवं मार्केटिंग सीनियर वाईस प्रेजिडेंट श्री अनिल कोलते ने वर्तमान समय में बीज कारोबार में आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डाला। साथ ही ईगल सीड्स एंड बॉयोटेक प्राइवेट लिमिटेड द्वारा नयी फसलों के एवं नये क्षेत्रों में कंपनी के कारोबार विस्तार के बारे में बताया। सोयाबीन बीज की अधिक से अधिक बिक्री करने और कंपनी के नये और अच्छे बीजों को किसानों तक पहुंचाने में भागीदार बनने का आवाहन किया।

जनरल मैनेजर मार्केटिंग एवं प्रोडक्ट डेवलपमेंट डॉ. अशोक गुप्ता द्वारा अपने प्रेजेंटेशन के माध्यम से विगत खरीफ सीजन में कंपनी द्वारा सोयाबीन, धान, मूँग, उड़द, मक्का, हाइब्रिड मिर्च, हाइब्रिड टमाटर के नयी किस्मों के किसानों के यहां लगाये डेमो और उनके परिणाम के बार में बताया। साथ ही रबी में गेहूं, मक्का, धान के डेमो लगाने के बारे में बताया। इस अवसर पर संशोधित सोयाबीन ईगल-131, ईगल हाइब्रिड मक्का ईगल-1501, संशोधित धान की किस्म ईगल-1306 हाइब्रिड धान की दो नयी किस्में ईगल 1401, ईगल-1402 और हाइब्रिड सब्जी बीजों में हाइब्रिड मिर्च ईगल 5302, हाइब्रिड टमाटर ईगल -5401, ईगल-5451 को लॉन्च किया गया। जनरल मैनेजर सेल्स श्री विजय मोहोद ने सोयाबीन बीजों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिये सोयाबीन की विभिन्न स्कीमों की घोषणा करते हुए अधिक से अधिक स्कीमों में भाग लेने के बारे में डिस्ट्रीब्यूटर्स बंधुओं से सहयोग करने के लिए कहा।

प्रमुख वक्ता मैनेजिंग डायरेक्टर श्री वैभव जैन ने बताया की कंपनी ईगल सीड्स एंड बायोटेक लिमिटेड से अब ईगल सीड्स एंड बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड बन गयी है। साथ ही श्री जैन ने बताया की कंपनी अब नए-नए उच्च गुणवत्ता के उत्पाद किसानों को उपलब्ध करवाने हेतु पूरे देश में अनुसन्धान ट्रायल लगाने के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों से भी अनुबंध करने के क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। इस अवसर पर आपने कंपनी में चल रहीं अन्य गतिविधियों के बारे में बताया। श्री जैन ने सभी व्यापारियों से आने वाले समय में भी इसी प्रकार के सहयोग की अपेक्षा की।

इस अवसर पर व्यापारियों और टीम के मेंबर्स को अवार्ड और रिवॉर्ड सेरेमनी में सम्मानित किया गया। सीनियर वाईस प्रेजिडेंट श्री अनिल कोलते को 37 वर्षों के बीज कारोबार के अनुभव एवं भारतीय बीज कारोबार में सहयोग करने के लिये लीडरशीप अवार्ड से सम्मानित किया गया।

# शन्मुखा एग्रीटेक की किसान संगोष्ठी आयोजित

**सीहोर।** ग्राम गूगलबाड़ा, जिला सीहोर में किसान जागरूकता एवं संगोष्ठी का आयोजन शन्मुखा एग्रीटेक लिमिटेड द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में शन्मुखा के एमडीई महीन वर्मा एवं फिल्ड असिस्टेंट पुरुषोत्तम चौहान के साथ ग्राम गूगलबाड़ा के अन्य लोगों ने भाग लिया।

शन्मुखा के एमडीई महीन वर्मा ने किसानों को टमाटर की फसल से संबंधित जानकारी दी जिसमें गेहूं की फसल से संबंधित बुवाई बीज उपचार आदि रोगों की रोकथाम एवं कंपनी के विभिन्न उत्पादों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कंपनी के मोक्षा, टर्मिनेटर आदि उत्पादों की जानकारी भी दी। इसके साथ-साथ किसान बायोफर्टिलाइजर का भी प्रयोग करें जिससे उनकी भूमि भी स्वस्थ्य रहेगी और फसल की उपज भी बढ़ेगी।

**नरसिंहपुर वोहानी में**

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें। **तारेश लोधी**

**मे. अपना ट्रेडर्स**

**मेन रोड वोहानी ( सिहोरा )**

**जिला-नरसिंहपुर ( म.प्र. ) मो. 9644657299**

● डॉ. लक्ष्मी चौहान ● डॉ. अनिल शिंदे
● डॉ. गिर्राज गोयल ● डॉ. वैशाली खरे
पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

# देशी मुर्गीपालन, अतिरिक्त आय का साधन

**आज के आधुनिक परिवेश में मुर्गीपालन एक व्यवसाय के रूप में बहुत ही उपयोगी संसाधन है। इस व्यवसाय को किसान अतिरिक्त आय का साधन मान सकते हैं क्योंकि प्राकृतिक विपदा के कारण फसल का नुकसान या फसल का उचित दाम न मिल पाने के कारणों की वजह से खेती पर निर्भर नहीं रहा जा सकता और अतिरिक्त आय का साधन रखना आज की स्थिति की आवश्यकता भी है।**

मुर्गीपालन को कम लागत में भी शुरू कर सकते हैं एवं घर के दूसरे सदस्य जैसे कि बच्चे, महिला भी मुर्गीपालन व्यवसाय को संभाल सकते हैं। इसी के साथ ही बेरोजगार युवक, लघु एवं सीमांत किसान भी इसे व्यावसायिक रूप से अपना सकते हैं। अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में घर के पिछवाड़े में मुर्गीपालन किया जाता है जिसमें 15-20 की संख्या में मुर्गीपालन करते हैं जो काफी लोकप्रिय है, परंतु घर के पिछवाड़े में मुर्गीपालन को वैज्ञानिक तरीकों से किया जाए तो वह किसान एवं मुर्गीपालकों के आमदानी का अच्छा स्त्रोत बन सकता है।

## देशी नस्लें

हमारे भारत देश में पाई जाने वाली विभिन्न नस्लों को सामूहिक रूप से देशी नस्ल कहते हैं। जैसे कि कड़कनाथ, असील, चित्तागोरा, घागस, बसरा, तेलीचेरी आदि। कुक्कुट पालन परियोजना निर्देशालय हैदराबाद द्वारा वनराजा एवं कर्नाटक पशुचिकित्सा महाविद्यालय बैंगलोर द्वारा गिरीराजा नस्लें विकसित की गई हैं। केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर द्वारा कुछ घर के पिछवाड़े में पाई जाने वाली नस्लें विकसित की गई है। 1) कारी निर्भिक (असील क्रॉस) 2) कारी श्यामा (कड़कनाथ क्रॉस) 3) हितकारी (नेकड नैक क्रॉस) 4) उपकारी (फिजल क्रॉस)। पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) द्वारा घर के पिछवाड़े में पाली जाने वाली नर्मदा-निधि नस्ल विकसित की गई है। विकसित नस्लें आवश्यक गुणों से परिपूर्ण, शारीरिक अधिक वजन, स्थानीय वातावरण में स्वयं को अनुकुल रखना, अधिक रोग-प्रतिरोधी क्षमता, 200-220 वार्षिक अंडा उत्पादन की क्षमता रखती हैं।

## आवास व्यवस्था

सामान्यत: इस पद्धति में आवास की आवश्यकता नहीं होती है फिर भी मौसम की विपरीत परिस्थितियों एवं शिकारी जानवर जैसे- कुत्ता, बिल्ली से बचाने के लिए आवास की आवश्यकता होती है। प्रति मुर्गी को 1.5-2 वर्ग फीट स्थान देना चाहिए। जैसा कि 25 से 30 मुर्गियों के लिए 8 गुणा 6 गुणा 6 फीट जगह की आवश्यकता होती है। उसमें हवा एवं सूर्य प्रकाश आने के लिए जाली लगानी चाहिए अथवा उसमें छोटा सा दरवाजा एवं खिड़की बना सकते हैं।

## आहार व्यवस्था

मुर्गियों का 70 प्रतिशत खर्चा उनकी आहार व्यवस्था पर आता है। इसलिये हमें अपने पास उपलब्ध संसाधनों का प्रभावशाली इस्तेमाल करना चाहिए। आजकल विभिन्न प्रकार के आहार मिश्रण बाजार में उपलब्ध हैं एवं बनाये भी जा सकते हैं। मुर्गियों के आहार में विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों का उचित मात्रा में प्रयोग करने से लाभकारी मिश्रण बनाया जा सकता है। इस मिश्रण के दाने में सभी पौषक तत्व जैसे कि कार्बोहाइड्रेट्स/ऊर्जा, प्रोटीन, खनिज मिश्रण एवं विटामिन सही मात्रा में होने से अंडे और मांस के उत्पादन में अधिक वृद्धि दर प्राप्त होती है।

मुर्गियों के आहार में मक्का 30-35 प्रतिशत, गेहूं 15-20 प्रतिशत, राईस पॉलिश 4-5 प्रतिशत, सोयाबीन खली 18-20 प्रतिशत, मूंगफली खली 12-15 प्रतिशत, मछली चूर्ण 5-6 प्रतिशत, कैल्शियम स्त्रोत 1-2 प्रतिशत, विटामिन-खनिज मिश्रण 1-2 प्रतिशत में देना चाहिए। वैसे तो खुले में छोड़े हुए मुर्गियां दिनभर चरकर रसोई का बचा खाना, दाना, कीड़े-मकोड़े भी खा लेते हैं और अपना गुजारा कर लेते हैं। खासकर के बरसात के दिनों में इनके खाने का ध्यान रखना चाहिए क्योंकि इस समय कोई फसल की कटाई नहीं होती। वैसी स्थिति में पूरक आहार की जरूरत होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में इसे एजोला या केंचुआ पूरक आहार दे सकते हैं। यह एक अच्छे प्रोटीन का स्त्रोत है।

## स्वास्थ्य प्रबंधन

पिछवाड़े में रखे जाने वाले मुर्गियों में इकोलाई जीवाणु और अंत: परजीवी (कृमि) का प्रकोप देखने को मिलता है। ऐसे में कृमि के लिए 2-3 माह के अंतराल पर कृमिनाशक दवा पानी में पिलानी चाहिए।

चूंकि ये मुर्गियां नाली एवं गड्ढे में जमा हुआ पानी पीती है जिसमें इकोलाई नामक जीवाणु का प्रकोप होता है जिससे पतला दस्त, सांस लेने में कठिनाई और कुछ दिनों बाद मर जाते हैं। ऐसे समय में हमें उचित एन्टीबायोटिक का प्रयोग करना चाहिए। मुर्गी को जीवाणु एवं विषाणुजन्य रोगों से बचाव करने के लिए टीकाकरण आवश्यक होता है।

| उम्र | बीमारी का नाम | टीका का प्रकार |
|---|---|---|
| 1 दिन | मरेक्स | |
| प्रथम सप्ताह | रानीखेत | एफ1 |
| द्वितीय सप्ताह | गम्बोरो | मध्यम |
| तृतीय सप्ताह | रानीखेत | लासोटा |
| 22-28 दिन | गम्बोरो | मध्यम/मध्यम तीव्र (हॉट) |
| 5-6 सप्ताह | रानीखेत | लासोटा |
| 10 सप्ताह | आई एवं टी | टिश्यू कल्चर |
| 10 सप्ताह | रानीखेत | आर 2 बी |

## मुर्गीपालन के लाभ

- यह व्यवसाय मुर्गियों को घर के पीछे पालने हेतु बहुत कम खर्च में शुरूआत कर सकते हैं।
- मुर्गियों का मांस एवं अण्डे उच्चतम प्रोटीन का स्त्रोत है जिसके सेवन से कुपोषणता दूर होती है एवं रोगों से लड़ने की क्षमता मिलती है।

**आय का साधन:** एक देशी मुर्गी को मांस हेतु बाजार में बेचने से एवं उनके अंडे उत्पादन से अतिरिक्त आय का लाभ ले सकते हैं।

● **डॉ. रोहित शर्मा,** पशु आनुवंशिकी एवं प्रजनन विभाग अपोलो कॉलेज ऑफ वेटरनरी मेडिसिन
● **डॉ. रेणुका हाडा,** पशु आनुवंशिकी एवं प्रजनन विभाग पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ वेटेरिनरी एजुकेशन एंड रिसर्च
● **रोहिताश कुमार,** पशु चिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफवेटेरिनरी एजुकेशन एंड रिसर्च

# बर्ड फ्लू:

**बर्ड फ्लू, जिसे वैज्ञानिक रूप से एवियन इन्फ्लूएंजा के रूप में जाना जाता है। दुनिया भर में पोल्ट्री उद्योग और सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए एक आवर्ती खतरा बनकर उभरा है। कई क्षेत्रों में पक्षियों की मौतों में हाल ही में हुई वृद्धि ने प्रकोप की आशंकाओं को बढ़ा दिया है, जिससे सतर्कता और निवारक उपायों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित किया गया है।**

## बर्ड फ्लू क्या है?

बर्ड फ्लू एक अत्यधिक संक्रामक वायरल संक्रमण है जो मुख्य रूप से पक्षियों, विशेष रूप से मुर्गियों, बत्तखों और टर्की जैसे घरेलू पोल्ट्री को प्रभावित करता है।

एच5एन1 और एच7एन9 जैसे कुछ उपभेद कभी-कभी मनुष्यों को संक्रमित कर सकते हैं, जिससे गंभीर श्वसन संबंधी बीमारियां हो सकती हैं। जबकि मानव-से-मानव संचरण दुर्लभ है, वायरस के उत्परिवर्तित होने और महामारी को भड़काने की क्षमता एक गंभीर चिंता का विषय बनी हुई है।

## प्रसार और वैश्विक प्रभाव

वायरस संक्रमित पक्षियों, उनके मल या दूषित सतहों के सीधे संपर्क से फैलता है। प्रवासी पक्षी प्राकृतिक वाहक होते हैं, जो अक्सर मौसमी आवागमन के दौरान वायरस को नए क्षेत्रों में ले आते हैं। अपर्याप्त जैव सुरक्षा उपायों वाले जीवित पक्षी बाजार और फार्म इसके संचरण को बढ़ाते हैं।

एशिया, यूरोप और अमेरिका में इस बीमारी के फैलने की खबरें आई हैं, जिसके प्रसार को रोकने के लिए लाखों पक्षियों को मारा गया है। ये पक्षी मारने की प्रक्रिया, हालांकि आवश्यक है, किसानों की आजीविका को तबाह कर देती है और पोल्ट्री आपूर्ति श्रृंखलाओं को बाधित करती है। इसके अलावा, पोल्ट्री सुरक्षा के बारे में उपभोक्ता की आशंका अक्सर मांग में गिरावट का कारण बनती है, जिससे संबंधित उद्योग प्रभावित होते हैं।

# पोल्ट्री और सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए एक बढ़ता खतरा

## मनुष्यों के लिए स्वास्थ्य जोखिम

हालांकि बर्ड फ्लू मुख्य रूप से पक्षियों को प्रभावित करता है, लेकिन संक्रमित पक्षियों के निकट संपर्क में रहने वाले मनुष्य जोखिम में हैं। मनुष्यों में लक्षण बुखार और खांसी से लेकर गंभीर श्वसन संकट तक होते हैं, कुछ मामलों में यह घातक भी साबित हो सकता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ चेतावनी देते हैं कि एक उत्परिवर्तन जो कुशल मानव-से-मानव संचरण को सक्षम करता है, वैश्विक स्वास्थ्य संकट का कारण बन सकता है।

## निवारक उपाय और सरकारी प्रतिक्रिया

बर्ड फ्लू के प्रसार को रोकने के लिए सरकारें और स्वास्थ्य एजेंसियां सक्रिय उपायों के महत्व पर जोर देती हैं।

**किसानों के लिए:** सख्त जैव सुरक्षा प्रोटोकॉल लागू करें, नए पक्षियों को अलग करें और नियमित रूप से कृषि उपकरणों को कीटाणुरहित करें।

**व्यक्तियों के लिए:** बीमार या मृत पक्षियों को छूने से बचें और सुनिश्चित करें कि खाने से पहले पोल्ट्री को अच्छी तरह से पकाया गया हो।

**अधिकारियों के लिए:** प्रकोप का जल्द पता लगाने के लिए निगरानी करें, संक्रमित पक्षियों को मारे और प्रभावित किसानों को मुआवजा दें।

( शेष पृष्ठ 11 पर )

● **डॉ गीता सिंह,** वैज्ञानिक (कृषि विस्तार)
कृषि विज्ञान केंद्र, डिंडोरी (म.प्र.)
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

**ज्वार बाजरे के परिवार से है और इन दोनों का सेवन सर्दियों में किया जाता है। ज्वार का आटा रिफाइंड आटे के मुकाबले बहुत पौष्टिक है। ज्वार ग्लूटेन फ्री अनाज है। इसका सेवन वो लोग कर सकते हैं जो गेहूं नहीं खा सकते हैं। ज्वार प्रोटीन,आयरन, फाइबर कैल्शियम आदि से भरपूर अनाज है।**

भारत में ज्वार को कई अलग-अलग नामों से जाना जाता है जैसे कि अंग्रेजी में सोरघम, तामिल में चोलं, संस्कृत में जूर्ण, कनड़ में जोला, बंगाली में जुयारा, पंजाबी में जुनरी आदि।

### ज्वार के आटे के फायदे

**स्वस्थ डाइजेशन:** ज्वार का सेवन सही मात्रा में करने से पाचन शक्ति स्वस्थ तरीके से काम करती है। इसमें फाइबर भरपूर मात्रा में पाया जाता है और सेहतमंद पाचन शक्ति के लिए फाइबर का सेवन करना जरूरी है। एक सर्विंग ज्वार में लगभग 12 ग्राम फाइबर होता है जो दिनभर की फाइबर की खपत को पूरा करने में कई हद तक मदद कर सकता है। फाइबर का सेवन करने से कब्ज, मोटापा, दिल से जुड़ी बीमारी आदि में राहत मिलती है।

**सेहतमंद दिल:** जब दिल की सेहत की बात होती है तो सबसे पहले कोलेस्ट्रॉल लेवल का जिक्र जरूर होता है। दिल को सेहतमंद बनाए रखने के लिए कोलेस्ट्रॉल लेवल का सामान्य रहना बेहद जरुरी है। ज्वार का सेवन दिल को सेहतमंद बनाए रखने में लाभदायक है। यह खून को जमा नहीं होने देता है जिससे शरीर में खून का बहाव अच्छे से होता है और दिल सेहतमंद रहता है। यह खराब कोलेस्ट्रॉल का लेवल कम और अच्छे कोलेस्ट्रॉल का लेवल ज्यादा बनाए रखने में मदद करता है।

### वजन घटाने में सहायक

वेट लॉस डाइट में हाई फाइबर का सेवन करना चाहिए जिससे लंबे समय के लिए पेट भरा रहे और बार- बार खाना ना खाएं। फाइबर को पचने में ज्यादा समय और मेहनत लगती है जिससे मेटाबोलिज्म बढ़ता है और वजन कम करने में मदद मिलती है। इसलिए अगर आप वजन कम करना चाहते हैं तो फाइबर से भरपूर ज्वार एक अच्छा विकल्प है।

**ग्लूटेन फ्री:** जो लोग अनाज जैसे कि गेहूं नहीं खा सकते हैं उन लोगों के लिए ज्वार एक अच्छा ग्लूटेन फ्री अनाज है जिसे अनाज ना खाने वालों के लिए जाना जाता है।

**सामान्य ब्लड शुगर लेवल:** ज्वार सामान्य ब्लड शुगर लेवल बनाए रखने के लिए भी जाना जाते हैं। डायबिटीज से गुजर रहे लोग ज्वार को अपनी डाइट में डॉक्टर की सलाह के बाद शामिल कर सकते हैं।

**मजबूत हड्डियां:** शरीर में सही मात्रा में मैग्नीशियम होने से कैल्शियम का लेवल सामान्य बनाए रहने में मदद मिलती है। ऐसा होने से हड्डियों को मजबूत रहने में मदद मिलती है।

**स्वस्थ आंखें:** सही मात्रा में ज्वार का सेवन करने आंखों की रोशनी लंबे समय के लिए अच्छी बनी रहती है।

**मजबूत दांत:** ज्वार के बीजों को पीसकर दांतों पर लगाने से दांत में दर्द, मसूड़ों में दर्द में आराम मिल सकता है।

**मुहांसे:** ज्वार के बीज को पीस लें और थोड़ा पानी मिक्स करें और त्वचा पर लगा लें। ऐसा करने से मुहांसे कम होने में मदद मिल सकती है।

### ज्वार के आटे के अन्य फायदे

- ज्वार के आटे की रोटी को डाइट में शामिल करना बेहद आसान होता है। यह आसानी से पच जाती है और साथ ही पेट से जुड़ी परेशानियों को दूर रखने में मदद करती है क्योंकि ज्वार फाइबर से भरपूर होता है।
- ज्वार में मैग्नीशियम, कॉपर, कैल्शियम, आयरन, प्रोटीन आदि पाए जाते हैं जो इम्यूनिटी स्ट्रोंग बनाए रखने में मदद करते हैं। इम्यूनिटी स्ट्रॉंग रहने से फ्री रेडिकल का खतरा कम रहता है जो बीमारी पैदा करने के मुख्या कारण है।

### ज्वार के व्यंजन

**ज्वार की रोटी:** ज्वार की रोटी बनाने के लिए सबसे पहले ज्वार का आटा लें और गर्म पानी से आटा लगा लें। ज्वार की रोटी बनाने के लिए चकला-बेलन की जरुरत नहीं। आप हाथ से ही रोटी बना सकते हैं। अब तवे पर रोटी डालें, सेकें और ज्वार की रोटी तैयार है। इसे चटनी और गुड़ के साथ खाएं।

**ज्वार का डोसा:** ज्वार का आटा लें और उसमें नमक, अजवाइन, कटा हुआ प्याज, हरी मिर्च, धनिया, जीरा और पानी डालें और अच्छे से मिक्स करें। अब गर्म तवे पर तेल डालें और गर्म होने के बाद डोसा का घोल डालें। दोनों तरफ से अच्छे से पकाएं और ज्वार का डोसा तैयार है। इसे नारियल की चटनी या सांभर के साथ खाएं।

**ज्वार की इडली:** ज्वार की इडली बनाने के लिए ज्वार का आटा, सूजी और दही अच्छे से मिक्स करें। इसके बाद पानी भी डालें और अच्छे से मिक्स करें। दूसरे पैन में इडली के मिश्रण में तड़का तैयार करें। अपनी पसंद की सामग्री से तड़का तैयार करें। मूंगफली कूटकर डालने से इडली का स्वाद बढ़ जाता है। तड़का इडली मिश्रण में डालें और ढक दें। अब इडली स्टैंड में तेल लगाकर इडली का घोल डालें और भाप में इडली बनने दें।

### ज्वार के आटे के नुकसान

ज्वार के आटा के फायदे कई सारे हैं लेकिन अधिक मात्रा में ज्वार का सेवन करने से नुकसान भी हो सकते हैं। इसलिए ज्वार का सेवन सही मात्रा में और सही तरीके से ही करें।

- अधिक मात्रा में ज्वार खाने से ब्लड शुगर लेवल अचानक से बढ़ या घट सकता है।
- कुछ लोगों को ज्वार से एलर्जी भी हो सकती है।
- अधिक मात्रा में ज्वार खाने से वजन बढ़ भी सकता है क्योंकि यह फाइबर से भरपूर होता है।
- फाइबर का सेवन अधिक मात्रा में करने से पेट से जुड़ी परेशानी हो सकती है।
- ज्वार के आटा के फायदे कई सारे हैं अगर इसका सेवन सही तरह से किया जाए।

(पृष्ठ 10 का शेष)

**बर्ड फ्लू........**

गलत सूचना को कम करने और सुरक्षित प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए जन जागरूकता अभियान महत्वपूर्ण हैं।

### पिछले प्रकोपों से सबक

पिछले प्रकोपों ने मजबूत पशु चिकित्सा बुनियादी ढांचे और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता को प्रदर्शित किया है। टीकाकरण कार्यक्रम और वायरस के उपभेदों के आनुवंशिक विश्लेषण सहित समय पर हस्तक्षेप, रोग को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन जैसे वैश्विक संगठन व्यापक प्रकोपों को रोकने के लिए प्रारंभिक पहचान और सूचना साझा करने के महत्व पर जोर देते हैं।

### निष्कर्ष

बर्ड फ्लू सार्वजनिक स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा और दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं के लिए निहितार्थ के साथ एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है। जबकि प्रकोपों को पूरी तरह से समाप्त नहीं किया जा सकता है, कड़े उपाय, सार्वजनिक जागरूकता और वैज्ञानिक प्रगति उनके प्रभाव को कम कर सकती है। इस आवर्ती खतरे को संबोधित करने के लिए मानव और पशु दोनों के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है।

## एन.जी.ओ. कृषि विज्ञान केन्द्रों की द्वितीय समीक्षा बैठक आयोजित

**इंदौर।** कृषि विज्ञान केन्द्र, कस्तूरबाग्राम, इन्दौर में देश के 20 एन.जी.ओ. (अशासकीय संस्थान) केवीके की द्वितीय समीक्षा बैठक आयोजित की गई। इसका आयोजन संयुक्त रुप से आई.सी.ए.आर. कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, जबलपुर, आई.सी.ए.आर. कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, कस्तूरबाग्राम, इन्दौर द्वारा किया गया।



बैठक के मुख्य अतिथि डॉ. पी. दास., अध्यक्ष, एन.जी.ओ. कमेटी एवं पूर्व डी.डी.जी. (कृषि विस्तार), आई.सी.ए.आर., नई दिल्ली तथा विशेष अतिथि डॉ. लाखन सिंह, सदस्य एन.जी.ओ. कमेटी एवं पूर्व निदेशक, अटारी, पुणे, डॉ. एस.आर.के सिंह., निदेशक अटारी, जबलपुर, डॉ. शायक एन. मीरा, निदेशक अटारी, हैदराबाद, डॉ. प्रदीप डे, निदेशक अटारी, कोलकाता, जे.पी. मिश्रा, निदेशक अटारी, जोधपुर थे।

बैठक में देशभर से आये 20 एन.जी.ओ. केवीके के प्रमुखों द्वारा उनकी गतिविधियों एवं इनके प्रभाव का प्रस्तुतिकरण किया गया। बैठक में अध्यक्ष एवं सदस्यों द्वारा उनके कार्य का आंकलन कर एन.जी.ओ. केवीके के सुदृढ़ीकरण एवं कार्यों को और प्रभावी बनाने के लिये आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये। साथ ही एन.जी.ओ. केवीके के सामने आ रही समस्याओं और उनके विजन पर चर्चा की गई। कस्तूरबाग्राम, इन्दौर में बैठक प्रारंभ होने के पूर्व वरिष्ठ अतिथियों द्वारा केवीके, कस्तूरबाग्राम के प्रक्षेत्र का भ्रमण किया गया।

बैठक के बाद निकटवर्ती कृषि विज्ञान केन्द्रों का भ्रमण किया गया। केन्द्र के प्रभारी डॉ. राधेश्याम टेलर ने स्वागत उद्बोधन दिया। संचालन एवं आभार प्रदर्शन डॉ. हरीश एम.एन., वैज्ञानिक, अटारी जबलपुर ने किया।

# आई.सी.ए.आर.ने कृषि विज्ञान केन्द्र का किया भ्रमण

**रतलाम।** आई.सी.ए.आर., नई दिल्ली टीम द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र जावरा, रतलाम का भ्रमण किया गया। टीम सदस्यों में आई.सी.ए.आर. के डॉ. पी.दास., पूर्व उप महानिदेशक (कृषि प्रसार), डॉ. लाखन सिंह, पूर्व निदेशक अटारी, पुणे, डॉ. एस.एन. मीरा निदेशक अटारी, हैदराबाद, डॉ. एस.आर.के. सिंह, निदेशक अटारी, जबलपुर, डॉ. एस. भास्करन, प्रधान वैज्ञानिक अटारी, हैदराबाद एवं डॉ. हरीश एम.एन., वैज्ञानिक अटारी, जबलपुर शामिल थे ।

कृषि विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. सर्वेश त्रिपाठी ने केन्द्र द्वारा जिले में किए जा रहे नवाचारों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। साथ ही केन्द्र पर संचालित विभिन्न प्रदर्शन इकाईयों का अवलोकन कर संबंधित वैज्ञानिकों से चर्चा की। टीम ने जिले के प्रगतिशील किसान जितेन्द्र पाटीदार के अम्बी वाईन उत्पादन इकाई एवं अंगूर एवं अमरूद के बगीचों का भ्रमण किया। साथ ही केवीके पर उपस्थित प्रगतिशील किसान भारत सिंह राठौर, नाना लाल धाकड़, बनेसिंह एवं कपिल धाकड़ आदि से खेती-किसानी के बारे में टीम सदस्यों से चर्चा हुई। टीम ने केवीके द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि केन्द्र जिले के किसानों के लिए बहुत अच्छा कार्य कर रहा है और आगामी वर्षों में कृषि उद्यमिता को ध्यान में रखते हुए कार्य करें। टीम भ्रमण के दौरान केवीके से डॉ. बरखा शर्मा, डॉ. सी.आर. कांटवा, डॉ. रामधन घसवा, डॉ. सुशील कुमार, डॉ. ज्ञानेन्द्र प्रताप तिवारी, डॉ. शिश राम जाखड़, मनोज कुमार रजक, अनिल उपाध्याय एवं आदित्य प्रताप राठौर का सहयोग सराहनीय रहा।

# सरसों प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

**मुरैना।** कृषि विज्ञान केन्द्र, मुरैना अंतर्गत ग्राम मैथाना में सरसों फसल में प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र शस्य विज्ञान अंतर्गत अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन का आयोजन ग्राम मैथाना, मुरैना में सरसों फसल के अंतर्गत किया गया। इस कार्यक्रम में कृषक प्रक्षेत्र पर सरसों की उन्नत प्रजाति रूकमणी का उपयोग प्रदर्शन कार्यक्रम हेतु किया गया है। रूकमणी प्रजाति जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न परिस्थितियों में उच्चतम उत्पादन देने में सक्षम है। इस प्रजाति से 15-18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज प्राप्त की जा सकती है।

कार्यक्रम में डॉ. बी.एस. कंसाना द्वारा कृषकों की सरसों फसल से संबंधित समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि वर्तमान में फसल पुष्पन एवं फली भरने की अवस्था में है। आवश्यकतानुसार दाना भरते समय सिंचाई करने की सलाह दी। अन्य प्रमुख फसल गेहूं में खरपतवार की समस्या बताने पर डॉ. कंसाना द्वारा मेटसल्फूरान सल्फोसल्फूरान 36 ग्राम प्रति हेक्टेयर 25 दिन की फसल अवस्था पर उपयोग करने की सलाह दी। इसके प्रयोग से सभी खरपतवार प्रमुखतः गेहूं का मामा, इंद्र जौ, जंगली जवा, बथुआ एवं हजारदाना इत्यादि नष्ट हो जाते हैं एवं फसल से अधिकतम उपज प्राप्त होती है। कार्यक्रम के दौरान डॉ. रीना शर्मा द्वारा किसानों को वर्तमान परिस्थिति में लगातार फसल निरीक्षण कर कीट व्याधि नियंत्रण की सलाह दी गई तथा विशेषकर सरसों की फसल में माहू के नियंत्रण के लिये शुरूआत में ही उचित दवा छिड़काव करने की सलाह दी गई है। कार्यक्रम में ग्राम मैथाना 50-60 किसानों ने भाग लिया।

# मशरूम उत्पादन एवं प्रसंस्करण प्रशिक्षण का आयोजन

**धार।** कृषि विज्ञान केन्द्र, धार द्वारा उद्यमिता विकास हेतु मशरूम उत्पादन एवं प्रसंस्करण विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन ग्राम भोपावर, धार में वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस.एस. चौहान के मार्गदर्शन में किया गया। मशरूम की खेती की सबसे अच्छी बात यह होती है कि इसकी अलग-अलग किस्मों की खेती साल भर कर सकते हैं। इससे साल भर कमाई होती रहती है। साथ ही मशरूम की खेती के साथ वर्मी कम्पोस्ट एवं केंचुआ उत्पादन करके अपनी आय को और भी बढ़ा सकते हैं।

केंद्र की प्रसार वैज्ञानिक अंकिता पाण्डेय द्वारा मशरूम उत्पादन की विभिन्नत कनीकी की जानकारी देते हुए विभिन्न प्रकार के मशरूम जैसे बटन, पैडीस्ट्रा, आयस्टर, मिल्की आदि मशरूम की विभिन्न प्रजातियों एवं इनको उगाने के लिए उपयुक्त समय व तापमान का सैद्धांतिक रूप से प्रशिक्षण दिया। उन्होंने बताया कि मशरूम की खेती को वैज्ञानिक तरीके से करने के लिये विभिन्न प्रकार के संक्रमण नियंत्रण हेतु जैसे फॉर्मलीन 40 प्रतिशत एवं बाबस्टीन का प्रयोग किया जाता है। किसानों को मार्केटिंग पैकेजिंग, लेवलिंग, मशरूम में उपस्थित विभिन्न पोषक एवं औषधीय गुणों के बारे में एवं मशरूम को किस तरह लंबे समय तक संग्रहण करने और विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाने तकनीकी की जानकारी भी प्रदान की गई। कार्यक्रम में भोपावर गांव के लगभग 21 किसानों ने अपनी भागीदारी की।

# छात्राओं को गौशाला एवं जैविक कृषि फार्म का भ्रमण कराया

**कटनी।** शासकीय कन्या महाविद्यालय कटनी की छात्राओं को व्यावसायिक शिक्षा के अंतर्गत आत्मनिर्भर, स्वावलंबी एवं स्वरोजगार स्थापित करने के लिए परियोजना कार्य हेतु श्याम श्री गौशाला एवं जैविक कृषि फार्म तेवरी का शैक्षणिक भ्रमण प्राचार्या डॉ. चित्रा प्रभात के मार्गदर्शन में जैविक कृषि विशेषज्ञ रामसुख दुबे द्वारा कराया गया।

शासन के निरंतर प्रयास से कृषि को लाभ का धंधा बनाने कम लागत तकनीकी जीरो बजट फार्मिंग के अंतर्गत गोबर, गोमूत्र का जैविक खेती में उपयोग, केंचुआ खाद निर्माण की सामान्य एवं चार गड्ढा विधि तथा वर्मी वाश निर्माण एवं फसलों में उनके उपयोग, प्रकाश खाद एवं ईंधन प्रयोग के लिए बायोगैस संयंत्र, जैविक खाद का फसल में उपयोग का अवलोकन कराया गया। कृषक पवन कुमार पांडे द्वारा गौशाला प्रबंधन, गोमूत्र एकत्रित करने का तरीका, गायों की विभिन्न नस्ल गीर, साहिवाल, हरियाणा, गंगा तीर आदि का अवलोकन तथा दुग्ध उत्पादन की जानकारी दी गई। संतुलित पशु आहार चारा, विभिन्न रोग, उनके नियंत्रण तथा टीकाकरण की जानकारी दी गई। छात्राओं को जैविक गेहूं, गन्ना, आलू, लौकी एवं अन्य सब्जियों का अवलोकन कराया गया। भ्रमण के दौरान कॉलेज से सुमन अहिरवाल, मीनाक्षी वर्मा, सुषमा वर्मा, हेमलता सिंह एवं फार्म के कर्मचारी तिवारी तथा दीपक मिश्रा आदि उपस्थित रहे।

# कृषक प्रशिक्षण का आयोजन

**मुरैना।** राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केन्द्र, मुरैना द्वारा वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. प्रशांत कुमार गुप्ता के निर्देशन में निकरा परियोजनान्तर्गत चयनित गांव कौलुआ ब्लॉक अम्बाह, जिला मुरैना में मौसम परिवर्तन का सरसों की फसल पर प्रभाव पर एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया था। उक्त कार्यक्रम में डॉ. प्रवीण कुमार गुर्जर वैज्ञानिक ने किसानों को सरसों की फसल को पाले से बचाने हेतु सुरक्षा के उपाय विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

डॉ. गुर्जर ने बताया कि सरसों की फसल के चारों ओर रात्रि में खेत की मेड़ पर कचरा जलाकर धुआँ देकर फसलों को पाले से बचाया जा सकता है। किसान भाई थायोयूरिया का 1 लीटर पानी में 1 ग्राम मिलाकर फसलों पर छिडकाव कर पाले से बचाव कर सकते हैं। इसके साथ-साथ सब्जी की फसल को हल्का पानी लगाकर भी पाले से बचाया जा सकता है। देवेश सिंह तोमर, वरिष्ठ अनुसंधान अध्ययेता द्वारा सरसों की फसल को पाले से बचाने के लिए हल्की सिंचाई करने की सलाह दी गई। इसके साथ-साथ जिन सरसों की फसल में फूल नहीं आये हैं उनके ऊपर से छंटाई करने की सलाह दी। जिससे अधिक शाखायें फूटने से फसल पैदावार बढ़ाई जा सकती है। निकरा परियोजना के बारे में जानकारी देते हुये देबेश सिंह तोमर एस.आर.एफ. द्वारा मृदा संरक्षण संबंधित विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। उक्त कार्यक्रम में गांव के प्रगतिशील किसान रामप्रकाश सिंह तोमर, देवेन्द्र सिंह तोमर, गुलाब सिंह तोमर साहित 39 कृषकों ने भाग लिया।

( पृष्ठ 7 का शेष )

**प्याज की उन्नत खेती.....**

**भीमा रेड**- इस किस्म के कंद आर्कषक लाल रंग के गोल होते हैं। कुल घुलनशील ठोस 10-11 प्रतिशत पाया जाता है। यह किस्म रोपाई के 115-120 दिनों बाद पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म को महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं गुजरात में उगाने के लिए अनुशंसित किया गया है। यह किस्म खरीफ एवं पछेती खरीफ मौसम में उगाने के लिए उपयुक्त है। इस किस्म से औसतन महाराष्ट्र की दषाओं में खरीफ में 270 क्विंटल, पछेती खरीफ में 520 क्विंटल एवं रबी में 310 क्विंटल उपज प्राप्त हो जाती है।

**भीमा राज**- इस किस्म के कंद दीर्घवृत्ताकार, संकेन्द्रक, पतली गर्दन वाले गहरे लाल रंग के होते हैं। कुल घुलनशील ठोस 10-11 प्रतिशत पाया जाता है। इस किस्म को रबी मौसम में राजस्थान, गुजरात, हरियाणा एवं दिल्ली में उगाने के लिए अनुशंसित किया गया है। यह किस्म खरीफ एवं पछेती खरीफ मौसम में महाराष्ट्र, कर्नाटक, एवं गुजरात में राज्य में उगाने के लिए भी उपयुक्त है। यह किस्म रोपाई के 120-125 दिन बाद पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 250-300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है पछेती खरीफ मौसम में अधिकतम 400-450 क्विंटल/हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है।

**भीमा किरन:** इस किस्म के कंद मध्यम लाल रंग के, दीर्घवृत्ताकार से गोल आकार के होते हैं। बोल्टर्स 5 प्रतिशत से कम निकलते हैं। गर्दन पतली एवं कुल घुलनशील ठोस 12 प्रतिशत पाया जाता है। इस किस्म की भण्डारण क्षमता अच्छी होती है एवं 5-6 माह तक भण्डारित किया जा सकता है। रोपाई के 130 दिनों बाद पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म को दिल्ली, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, बिहार, पंजाब, महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं आन्ध्रप्रदेश में रबी मौसम में उगाने के लिए अनुशंसित किया गया है। इस किस्म की औसत उपज क्षमता 415 क्विंटल/हेक्टेयर है।

**भीमा शक्ति:** इस किस्म के कंद आकर्षक लाल रंग के गोल होते हैं। कुल घुलनशील ठोस 11.8 प्रतिशत होता है। रोपाई के 130 दिन बाद फसल पककर तैयार हो जाती है। यह किस्म वर्ष 2010 में खरीफ एवं रबी मौसम में उगाने के लिए विमोचित की गई है। इस किस्म से महाराष्ट्र में खरीफ में 459 क्विंटल/हेक्टेयर एवं रबी में 427 क्विंटल/हेक्टेयर प्राप्त की गई है। यह किस्म थ्रिप्स के प्रति सहनशील है।

**भीमा श्वेता:** यह किस्म वर्ष 2010 में महाराष्ट्र में रबी मौसम में उगाने के लिए विमोचित की गई है। साथ ही यह मध्यप्रदेश, दिल्ली, पंजाब, उत्तरांचल, हरियाणा एवं गुजरात में रबी मौसम में उगाने के लिए उपुयक्त है। इस किस्म के कंद गोल आर्कषक सफेद रंग के होते हैं। कुल घुलनशील ठोस 11.5 प्रतिशत पाया जाता है। यह किस्म रोपाई में 110-115 दिनों बाद पककर तैयार हो जाती है। भण्डारण क्षमता मध्यम होती है। यह किस्म थ्रिप्स में प्रति सहनशील है। इस किस्म की औसत उपज 282 क्विंटल/हेक्टेयर है।

**भीमा शुभ्रा:** यह किस्म वर्ष 2010 में महाराष्ट्र क्षेत्र के लिए खरीफ एवं पछेती खरीफ में उगाने के लिए विमोचित की गई है। इस किस्म के कंद दीर्घवृत्ताकार से गोल आकार के आर्कषक सफेद रंग के होते हैं। कुल घुलनशील ठोस खरीफ मौसम में 10.4 प्रतिशत एवं पछेती खरीफ मौसम में 11.7 प्रतिशत पाया जाता है। यह किस्म खरीफ में रोपाई के 112 दिनों बाद एवं पछेती खरीफ में 125 दिनों बाद पककर तैयार हो जाती है। पछेती खरीफ प्याज को 2-3 माह तक भण्डारित किया जा सकता है। इस किस्म की औसत उपज खरीफ में 241 क्विंटल/हेक्टेयर एवं पछेती खरीफ खरीफ में 389 क्विंटल/हेक्टेयर है। यह किस्म मौसमी परिवर्तन के प्रति सहनशील होने के कारण तीनों मौसमों में उगाई जा सकती है। उपरोक्त किस्मों के अतिरिक्त निजी बीज कंपनियों द्वारा अनेक संकर एवं उन्नत किस्में विकसित की गई है, जिनका उपयोग कृषकों द्वारा किया जा रहा है।

**निजी बीज कंपनियों द्वारा विकसित प्याज की उन्नत किस्में**

| कंपनी का नाम | किस्म |
|---|---|
| सेमिनिज वेजीटेबल्स | रॉयल रेड, रॉयल सिलेक्शन, रोजिता, गुलमोहर |
| रैलीज सीड्स | बॉबी, नासिक रेड |
| नुनहेम्स सीड्स | रोजा, रिओसंती एग्रो |
| बेजो शीतल | लूसीफर, फ्लेअर, ओरिएन्ट, लिबर्टी |
| अंकुर सीड्स | अंकुर-210, 555, अंकुर व्हाइट |

**भूमि की तैयारी**- प्याज की रोपाई के पूर्व दो- तीन बखर चलाकर खेत को अच्छी तरह तैयार कर लेना चाहिए। तदुपरांत पाटा चलाकर खेत को समतल कर लें।

**एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन**- खाद एवं उर्वरकों का उपयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करें। सामान्यत: गोबर की खाद 200- 250 क्विंटल, नत्रजन 100 किलोग्राम, स्फुर 80 किलोग्राम एवं पोटाश 60 किलोग्राम प्रति हेक्टर की दर से दें। गोबर की खाद, स्फुर, पोटाश तथा नत्रजन की आधी मात्रा पौध रोपण के पूर्व भूमि की तैयारी के समय मृदा में मिलाएं तथा शेष नत्रजन की मात्रा को दो बराबर भागों में बांटकर रोपाई के 30 से 45 दिन बाद देना चाहिए।

**पौध तैयार करना**- एक हेक्टेयर में रोपाई के लिए 10 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। पौध तैयार करने के लिए 3:1 मीटर आकार की 15- 20 सेमी जमीन से ऊँची क्यारियाँ बनाएं। बीज को 4-5 सेमी की दूरी पर कतारों में 0.5-1 सेमी की गहराई पर बोयें। बीज को बोने के पूर्व कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलो या ट्रायकोडर्मा विरडी 4 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। बीज की बुआई के बाद क्यारियों की सूखी घास अथवा पत्तों से ढँक दें। क्यारियों में आवष्यक नमी बनाए रखने के लिए नियमित रूप से सिंचाई करें। बीज के अंकुरण होते ही पत्तों को हटा दें। पौध रोपाई के लिए 45 से 50 दिनों में तैयार हो जाती है। एक हेक्टेयर में रोपाई के लिए पौध तैयार करने हेतु 500 वर्ग मीटर की स्थान की आवश्यकता होती है।

**पौध रोपण**- पौध जब 10- 15 सेमी ऊँचाई के हो जाएं तब 15×10 सेमी कतार से कतार एवं पौधे से पौधे की दूरी पर रोपण करना चाहिए। पौध रोपण के तुरंत बाद सिंचाई करना चाहिए।

**रोपण का समय**- रोपाई का उपयुक्त समय खरीफ में जुलाई से अगस्त एवं रबी में दिसम्बर से जनवरी रहता है

**निंदाई- गुड़ाई**- प्याज एक उथली जड़ वाली फसल है। अत: प्याज के खेत में उथली निंदाई-गुड़ाई करना चाहिए। प्याज में खरपतवार नियंत्रण के लिए खरपतवारनाशियों का भी छिड़काव किया जा सकता है। रोपण के तुरंत बाद स्टाम्प (पेन्डीमिथालीन 30 ई. सी.) की 3 लीटर मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

**सिंचाई जल प्रबंधन**- सिंचाई की संख्या भूमि का प्रकार और जलवायु के ऊपर निर्भर करती है। प्याज एक उथली जड़ वाली फसल है। इसकी जड़ें भूमि की सतह से 8 सेमी की गहराई तक जाती है। प्याज में आवश्यकतानुसार प्रति सप्ताह हल्की सिंचाई करना चाहिए। रबी फसल में 8- 10 सिंचाई की आवश्यकता होती है। अधिक नमी में पर्पल ब्लॉच की संभावना बढ़ जाती है। खुदाई के 10 दिन पूर्व सिंचाई बंद कर देनी चाहिए।

**खुदाई**- जब पत्तियों का ऊपरी भाग सूखने लगे तो उसे भूमि में गिरा देना चाहिए। जिससे प्याज के कंद अच्छी तरह से पक सकें। कंद की खुदाई सावधानी पूर्वक अथवा कुदाली से करना चाहिए। खुदाई करते समय कन्द में चोट या खरोंच नही लगनी चाहिए।

**उपज**- प्याज की उन्नत किस्मों से औसतन 250- 300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है।

**भण्डारण**- प्याज का भण्डारण एक महत्वपूर्ण कार्य है। खुदाई करने के बाद कंदों को धूप में 7-10 दिन सुखाने के उपरांत हवादार कमरों में फैलाकर रखना चाहिए। भण्डारण के पूर्व कटे-फटे व रोगी कन्दों को अलग कर देना चाहिए। सामान्यत: 23.90-29.40 सेन्टीग्रेड तापक्रम पर 5-6 माह तक प्याज को भण्डारित किया जा सकता है।


## वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

**अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-**

कृषक दूत

एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स,
रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास
होशंगाबाद रोड, भोपाल ( म.प्र. )
फोन : ( 0755 ) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875, 9300754675, 9826686078



कृषक दूत में विज्ञापन एवं सदस्यता के लिये संपर्क करें

श्री नारायण सिंह राजावत पिता श्री ... 101, निजावद रोड, ग्राम लोहारिया पोस्ट-आगला, तहसील-बड़नगर जिला- उज्जैन (म.प्र.) 456771
मोबाइल : 7999394533



**मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स**
( कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान )

★औषधीय★वन ★सब्जी★फूल★बीज★स्प्रे पंप एवं पार्ट्स ★कीटनाशक ★ जैविक खाद ★ गार्डन टूल ★ जैविक उत्पाद ★ ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।
**वितरक** – ★ निर्मल सीड्स, जलगांव ★ कलश सीड्स, जालाना ★ अंकुर सीड्स, नागपुर ★ वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ★ दिनाकर सीड्स, गुजरात ★ सटिंड सीड्स, दिल्ली ★ फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ★ स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ★ जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ★ स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ★ अनु प्रोडक्ट्स लि. ★ श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com



**अर्जुन इण्डस्ट्रीज**
AN ISO 9001:2015 QMS CERTIFIED INDUSTRIES
समस्त कृषि यंत्रों के निर्माता एवं विक्रेता
• ट्राली • टेंकर • कल्टीवेटर • बोनी मशीन • पल्टीप्लाऊ



लाम्बाखेड़ा ओवरब्रिज, बायपास चौराहा, बैरसिया रोड, भोपाल (म.प्र.)
मो. 9826097991, 9826015664, 9981415744

# राष्ट्रीय युवा दिवस आयोजित

**ग्वालियर।** कृषि महाविद्यालय ग्वालियर में राष्ट्रीय युवा दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना प्रभारी, डॉ. शोभना गुप्ता ने विद्यार्थियों को राष्ट्रीय युवा दिवस का परिचय दिया। उन्होंने बताया कि इस दिन स्वामी विवेकानन्द जी के योगदान और उनके विचारों को याद करने तथा उन्हें युवाओं के बीच प्रेरित करने का मौका मिलता है। साल 1984 में इस दिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रुप में घोषित होने के बाद से ही पूरे देश में मनाया जाता है, उन्होने यह भी बताया कि शिक्षा को लेकर स्वामी विवेकानन्द जी के विचार क्रान्तिकारी थे, स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं होती बल्कि यह जीवन के हर पहलू में आत्मविश्वास और साहस को विकसित करने की प्रक्रिया है, जिससे व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है।

कार्यक्रम में अतिथि व्याख्याता डॉ. अभिषेक भट्ट प्रो. एम.आइ.टी.एस., ग्वालियर ने स्वामी विवेकानन्द के विचारों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि स्वामी विवेकानन्द ने भारत के लोगों के बीच भारतीय राष्ट्रवाद की अवधारणा को फैलाने में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया था। कार्यक्रम में लगभग 103 विद्यार्थी उपस्थित रहें तथा डॉ. अंकित पाण्डेय, डॉ. सुधीर सिंह एवं अन्य स्टॉफ का सहयोग रहा।

# राष्ट्रीय युवा दिवस का आयोजन

**धार।** कृषि विज्ञान केन्द्र, धार द्वारा केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस.एस.चौहान के मार्गदर्शन राष्ट्रीय युवा दिवस का आयोजन में किया गया। जिसमें उन्होंने किसानों को सम्बोधित करते हुए कहा कि 162 साल पहले 12 जनवरी को एक ऐसे बच्चे का जन्म हुआ था, जिसे दुनिया स्वामी विवेकानंद के नाम से जानती है। 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। आज हम एक ऐसे महान व्यक्तित्व की बात कर रहे हैं, जो न केवल भारत, बल्कि पूरी दुनिया के लिए प्रेरणा के स्त्रोत हैं। विवेकानंद जी के अंदर बचपन से ही जिज्ञासा और ज्ञान की भूख कूट-कूट कर भरी थी। इसी भूख को शांत करने की दिशा में वे स्वामी रामकृष्ण परमहंस के शिष्य बने। आगे चलकर अपने गुरु के आदर्शों को अपनाते हुए समाज और धर्म के लिए काम किया।

केंद्र की प्रसार वैज्ञानिक डॉ. अंकिता पांडेय ने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी का युवाओं में अटूट विश्वास था। उनका मानना था कि युवा ही देश का भविष्य हैं।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

# कृषि विज्ञान केन्द्रों का...

आखिर जो संस्थान किसानों को नई तकनीक सिखाने के लिए बनाए गए थे, वे खुद किसानों की समस्याओं का हल नहीं खोज पाएंगे।

किसान सरकार की नीतियों से पहले ही त्रस्त और पस्त हैं, और आंदोलन रत हैं। अगर सरकार ने जल्द ही कृषि विज्ञान केंद्रों की समस्याओं का समाधान नहीं किया, तो इसका असर सीधे किसानों और कृषि उत्पादन पर पड़ेगा। यह याद रखना जरूरी है कि कृषि विज्ञान केंद्रों की गिरती स्थिति केवल किसानों के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए खतरा है। अगर सरकार ने केवीके कर्मियों को उनका हक नहीं दिया, तो वह दिन दूर नहीं जब हमें अपनी कृषि व्यवस्था को बचाने के लिए विदेशों से मदद मांगनी पड़ेगी।

## सुलगते सवाल

क्या यह विडंबना नहीं है कि किसानों को आधुनिक खेती सिखाने वाले वैज्ञानिकों के पास खुद इतनी जगह नहीं है कि वे ढंग से बैठकर अपने शोध पर काम कर सकें? क्या यह मजाक नहीं है कि जिन कर्मियों को हरित क्रांति का आधार माना गया, वे अब खुद अपनी रोजी-रोटी के लिए संघर्ष कर रहे हैं?

आखिर कब तक भारत सरकार और आईसीएआर इस सच्चाई से आंखें मूंदे रहेंगी? क्या उन्हें यह समझ में नहीं आता कि यदि केवीके बंद हो गए, तो भारत की कृषि भी उस कुएं में गिर जाएगी, जहां से निकलना असंभव हो जाएगा। कृषि विज्ञान केंद्रों की उपयोगिता पर कोई सवाल नहीं उठा सकता। लेकिन वर्तमान में जिस तरह से इन्हें कमजोर किया जा रहा है, वह देश की कृषि को भी कमजोर कर देगा। सरकार को चाहिए कि वह इन कर्मियों की समस्याओं का जल्द से जल्द समाधान करे, अन्यथा कृषि विज्ञान केंद्रों के बंद होने के साथ ही भारत की कृषि व्यवस्था भी ढह जाएगी। यदि कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों के साथ इसी तरह सौतेला व्यवहार रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हम अपने बच्चों को सिर्फ किताबों में बताएंगे कि कभी इस देश में कृषि विज्ञान केंद्र हुआ करते थे। कृषि विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान की दुर्दशा ऐसे समय में चरम पर है जब पिछले छः वर्षों से देश के केन्द्रीय मंत्री मध्यप्रदेश के वर्तमान केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान केव्हीके एवं कृषि विश्वविद्यालयों की बदहाली से पूरी तरह वाकिफ हैं। इसके बावजूद भी दूरगामी कृषि विकास के सपने कितने कारगर होंगे ये तो आने वाला वक्त ही बतायेगा। हाल ही मध्यप्रदेश स्थित लगभग 50 कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों ने अपनी विभिन्न मांगों को लेकर आंदोलन भी किया है।

**( लेखक ग्रामीण अर्थशास्त्र एवं कृषि मामलों के विशेषज्ञ तथा राष्ट्रीय संयोजक, अखिल भारतीय किसान महासंघ ( आईफा ) हैं। )**


कृषक दूत

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 ( म.प्र. ) फोन 0755 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

कृषक दूत द्वारा प्रकाशित विभिन्न बहुपयोगी पुस्तकें

मुख्य कार्यालय : एफ.एम. 16, ब्लॉक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल ( म.प्र. ) फोन ( 0755 ) 4233824
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org



सदस्यता फार्म

कृषक दूत

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 ( म.प्र. ) फोन 0755 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम.....
संस्था का नाम.....
पूरा पता.....
ग्राम.....पोस्ट.....तहसील .....
जिला.....राज्य.....पिन कोड
दूरभाष/कार्या. ..... घर ..... मोबा. : .....

सदस्यता राशि का ब्यौरा

| | | | |
|---|---|---|---|
| ■ वार्षिक | : 700/- | ■ द्विवार्षिक | : 1300/- |
| ■ त्रैवार्षिक | : 1900/- | ■ पंचवर्षीय | : 3100/- |
| ■ दसवर्षीय | : 6100/- | ■ आजीवन | : 11000/- |

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र '' कृषक दूत'' की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए ( अंकों में ).....( शब्दों में ).....
बैंक का नाम..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक.....
दिनांक..... संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान..... प्रतिनिधि का नाम हस्ताक्षर सदस्य
दिनांक..... एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

## भारत एग्रीटेक किसान मेले में कृषि रसायन की भागीदारी

भारत एग्रीटेक इंदौर किसान मेले में कृषि रसायन एक्सपोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड के स्टॉल ने किसानों का ध्यान आकर्षित किया। उत्साही किसानों को स्टॉल पर पोषक सुपर स्टार, के-मैक्स, क्रील, क्रीफोस गोल्ड, ब्लिक सुपर जैसे उत्पादों की जानकारी दी। इस मौके पर कृषि रसायन एक्सपोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड की टीम ने न केवल किसानों को कीटनाशक, फफूंदनाशक, शाकनाशक और पीजीआर की विस्तृत श्रृंखला के बारे में समझाया, बल्कि उनकी खेती से जुड़े सवालों के व्यावहारिक समाधान भी दिए। किसान मेले में लगभग 10000 से अधिक किसानों ने सम्मिलित होकर किसान मेले को सफल बनाया। इस अवसर पर कंपनी के जनरल मैनेजर श्री अजय पाटिल (बाएं से तीसरे क्रम में) उपस्थित रहकर किसानों को कंपनी उत्पादों के बारे में बताया।

# पशु प्रजनन प्रक्षेत्र का निरीक्षण

**भोपाल।** पशुपालन एवं डेयरी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) लखन पटेल ने कहा है कि गोवंश के आहार में हरा चारा और साइलेज को शामिल करें। इससे गोवंश का स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा दुग्ध उत्पादन में वृद्धि होती है। श्री पटेल ने भदभदा, भोपाल स्थित जर्सी पशु प्रजनन प्रक्षेत्र भोपाल का निरीक्षण किया।

श्री पटेल ने निरीक्षण के दौरान प्रक्षेत्र पर उपलब्ध गोवंश के आहार की संरचना के विषय पर चर्चा की। उन्होंने गोवंश के आहार में साइलेज को शामिल करने के निर्देश दिए और कहा कि इससे दुग्ध उत्पादन में हुई बढ़ोतरी का अध्ययन किया जाए। साथ ही हरा चारा और साइलेज को आहार में सम्मिलित करने से दुग्ध उत्पादन में आने वाले वित्तीय भार का आंकलन भी किया जाए। श्री पटेल द्वारा निर्देश दिए गए कि अच्छी नस्ल के

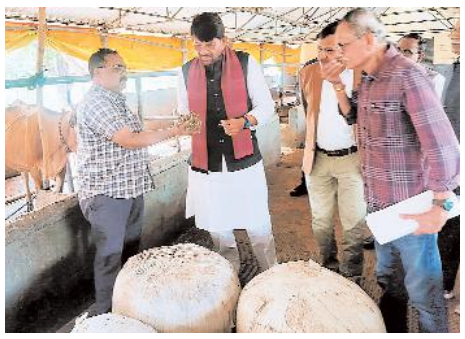

प्रजनन योग्य सांड सालरिया गो अभयारण्य, आगर मालवा और अन्य गौशालाओं को भेजे जाएं। उन्होंने प्रक्षेत्र के गोबर गैस प्लांट को पुनः चालू करने के निर्देश भी दिए। हरा चारा उत्पादन एवं दुग्ध उत्पादन आदि के संबंध में जानकारी भी ली। भ्रमण के दौरान संयुक्त संचालक पशुपालन डॉ. जी.के. वर्मा एवं संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

# ड्रोन स्टार्टअप्स को मिलेगा बढ़ावा: श्री चौबे

## अटल इनक्यूबेशन सेंटर आरएनटीयू में ड्रोन लैब स्थापित

**भोपाल।** अटल इनक्यूबेशन सेंटर रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में ड्रोन लैब स्थापित की गई है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रो-चांसलर डॉ. अदिति चतुर्वेदी वत्स, एसजीएसयू के कुलपति डॉ. विजय सिंह, आईक्यूएसी के निदेशक डॉ. नितिन वत्स, विश्वविद्यालय की कुलसचिव डॉ. संगीता जौहरी, एआईसी के सीईओ रोनाल्ड फर्नांडिस विशेष रूप से उपस्थित थे। विश्वविद्यालय का उद्देश्य है कि यह ड्रोन लैब उन छात्रों और उद्यमियों को जरूरी संसाधन, सुविधाएं और मार्गदर्शन प्रदान करेगा, जो ड्रोन तकनीक में नवाचार करना चाहते हैं।

इस लैब में ड्रोन टिन्करिंग किट्स, क्वाडकॉप्टर, हेक्साकॉप्टर और एग्री ड्रोन जैसी अत्याधुनिक ड्रोन तकनीक उपलब्ध है। इसके साथ ही ड्रोन बनाने, टेस्टिंग करने और सुधारने के लिए जरूरी उपकरण भी मुहैया कराए जाएंगे।

इस मौके पर संतोष चौबे ने कहा कि भारत को ड्रोन प्रौद्योगिकी के लिए एक वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित करने और सुरक्षा, कृषि, स्वास्थ्य सेवा, रसद और बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्रों को सुरक्षित करने के सरकार के उद्देश्य को पूरा करने में यह ड्रोन लैब महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। साथ ही देश के प्रधानमंत्री के स्वप्न मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसी अनूठी पहलों को और मजबूत करेगा।

डॉ. अदिति चतुर्वेदी वत्स ने बताया कि नवीनतम तकनीकी विकास और उभरते हुए उद्योगों में ड्रोन सेक्टर ने अत्यधिक लोकप्रियता हासिल की है। ड्रोन का उपयोग कृषि, सुरक्षा, निर्माण, निगरानी, और सप्लाई चेन में बढ़ता जा रहा है।

ऐसे में इस क्षेत्र में काम करने वाले स्टार्टअप्स और इनोवेटर्स के लिए विशेष स्थान और संसाधन की आवश्यकता है। इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए एआईसी-आरएनटीयू फाउंडेशन ने ड्रोन लैब की शुरुआत की है, जो इस क्षेत्र में काम कर रहे इनोवेटर्स और स्टार्टअप्स को जरूरी समर्थन, संसाधन और मार्गदर्शन प्रदान करेगा।


नव वर्ष पर मित्रों एवं स्नेहीजनों को भेंट का सर्वोत्तम उपहार

कृषक दूत की सदस्यता लेकर डायरी मुफ्त पायें

अब नये आकर्षक आकार में

कीमत 225/- रु. मात्र

डायरी सीमित मात्रा में उपलब्ध

कृषक दूत डायरी 2025

कृषक दूत डायरी 2025 के प्रमुख आकर्षण

- केन्द्र एवं राज्य पोषित विभिन्न कृषि योजनाओं की जानकारी।
- प्रमुख फसलों की कृषि कार्यमाला एवं उन्नत किस्मों की विस्तृत जानकारी।
- तहसील, विकासखण्ड, कृषि उपज मंडियों की सूची।
- प्रत्येक पृष्ठ पर कैलेण्डर तिथि, व्रत एवं त्यौहारों की जानकारी।
- मध्यप्रदेश में कार्यरत कृषि आदान प्रदायक कंपनियों की सूची।

संपर्क करें ➡ कृषक दूत

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, भोपाल (म.प्र.)

फोन : (0755) 4233824 मो. : 9425013875, 9300754675, 9827352535

Email:- krishak_doot@yahoo.co.in, Website : www.krishakdoot.org

आर.एन.आई.नं. एमपी एचआईएन/2000/06836 डाक पंजीयन क्र. एम.पी./ भोपाल/625/2024-26 कृषक दूत- एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.) Email:- krishak_doot@yahoo.co.in
डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार
कृषक दूत
पृष्ठ क्रमांक-16
भोपाल मंगलवार 21 से 27 जनवरी 2025

उम्मीद से
ज़्यादा का वादा

ACE TRACTORS

60.5 HP DI 6565 AV
TREM-IV ENGINE

4 सिलिण्डर का 4088 CC दमदार इंजन

विशेषताएं

- पावर स्टीयरिंग
- कांस्टेंट मेश गियर
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्रयल क्लच
- लिफ्ट 2000 kg
- तेल में डूबे ब्रेक
- आगे के टायर 7.5x16
- पीछे के टायर 16.9x28

दमदार ट्रैक्टर
शानदार परफॉर्मेंस

DI 350 NG | 40 HP

विशेषताएं

- मैकेनिकल स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- व्हील बेस 1960 MM
- सिंगल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm

हर कदम हर डगर
ACE TRACTORS
हर किसान का हमसफर

100% Swadeshi

ACE ट्रैक्टर 15-90 HP में उपलब्ध

कस्टमर हेल्प लाइन
1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राईवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.
Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India
Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com